Your Imagination, we Print...
JAY graphics & printers
COMMERCIAL PRINTERS
C-15 VIKRAM CHAMBARS, NR.INCOME TAX OFFICE, ASHRAM ROAD, AHMEDABAD.
Ph. : 93288 95485

Regd.RNI.No. GUJHIN/2016/72566

GANDHINAGAR

पाटनगर उदय

प्रधान सम्पादक : ईलेवान एच. ठाकर
मो.नं. : 99784 07016

सह सम्पादक : सुरेश के. मालाणी
मो.नं. 97269 63888

• वर्ष : 10 • अंक : 317 • दिनांक :- 23-08-2026, SUNDAY • पेज 4+4 मुल्य: 0.90/- (Paisa) • वार्षिक शुल्क : 280/-

'पाटनगर उदय'
दैनिक समाचार पत्र में समाचार, प्रेस नोट एवं विज्ञापन के लिये
सम्पर्क करें : गांधीनगर कार्यालय
403, अखबार भवन, सेक्टर-11, गांधीनगर- 382011.
अहमदाबाद कार्यालय : 4, अवनी हाउस, मिठाखली रेलवे क्रॉसिंग के पास, मिठाखली गाम, अहमदाबाद - 380006.
मोबाईल नं. : 93288 95485
email:- patnagaruday@gmail.com

कार्यवाहक सम्पादक : कनकभाई पंड्या •Published at 1-503, Pramukh Aura, Nr. Pramukh Nagar Bunglows, Pramukh Nagar Road, Kh-0 Road, Sargasan Char Rasta, GANDHINAGAR (GUJ) • email :- patnagaruday@gmail.com

कम उत्पादन और ज़्यादा मांग के कारण कीमतें बढ़ीं

चीनी की कीमत 70 प्रति किलो तक पहुंची, केंद्र ने माना कि उत्पादन घटा है

एजेंसी - नई दिल्ली,

देश में चीनी की कीमत ?70 प्रति किलो तक पहुंचने के बाद, केंद्र ने साफ़ किया है कि यह स्थिति इस साल चीनी का उत्पादन कम होने के कारण पैदा हुई है। चीनी का उत्पादन 343 लाख टन के अनुमान के मुकाबले सिर्फ़ 306 लाख टन हुआ, जबकि घरेलू मांग सिर्फ़ 280 से 285 लाख टन है। सरकार ने कहा कि चीनी की कीमतों का इथेनॉल उत्पादन से कोई लेना-देना नहीं है।

भारत में त्योहारों का मौसम शुरू हो रहा है और इसी समय, आलोचकों ने चीनी की कीमतें बढ़ने को लेकर केंद्र सरकार पर निशाना साधा है। उनका दावा है कि कीमतें इसलिए बढ़ रही हैं क्योंकि सरकार चीनी की सप्लाई इथेनॉल की ओर मोड़ रही है। केंद्र ने इन आरोपों को खारिज कर दिया है। केंद्र ने कहा कि 2022-23 में इथेनॉल उत्पादन में चीनी का योगदान 12 प्रतिशत था, जो 2025-26 में घटकर नौ प्रतिशत हो गया है; इसके हिसाब से यह हिस्सा 4 मिलियन टन से घटकर 2.8 मिलियन टन हो गया है। इस तरह, कुल चीनी उत्पादन का सिर्फ़ दसवां हिस्सा ही इथेनॉल के लिए जाता है। सरकार ने साफ़ किया है कि चीनी की कीमतों में यह बढ़ोतरी कम उत्पादन और ज़्यादा मांग के कारण हुई है। चीनी की कीमतें सिर्फ़ भारत में ही नहीं बढ़ी हैं। वे पूरी दुनिया में बढ़ी हैं। अनुमान है कि 2026-27 में कम से कम 3.3 मिलियन टन चीनी की कमी होगी। 30 जून को चीनी की कीमत 474 प्रति टन थी, जो 20 अगस्त को बढ़कर 552 प्रति टन हो गई। इस तरह, दो महीनों में चीनी की कीमत 16 प्रतिशत से ज़्यादा बढ़ गई है। खाद्य सचिव संजीव चोपड़ा ने कहा कि सरकार का साफ़ मानना ? ?है कि कुछ चीनी मिलों व्यापारियों द्वारा जमाखोरी के कारण चीनी की कीमतें बढ़ी हैं। इसे रोकने के लिए कई कदम उठाए गए हैं। 1 अगस्त से 30 नवंबर तक चीनी डीलरों पर 400 टन की स्टॉक लिमिट लगाई गई है। 1 सितंबर से, थोक खरीदार 15 दिनों की खपत से ज़्यादा चीनी नहीं खरीद पाएंगे। केंद्र और राज्य की टीमें मिलकर मिलों में स्टॉक की जांच कर रही हैं। उनका मकसद जमाखोरी और बनावटी कमी को रोकना है। सरकार ने त्योहारों के मौसम में चीनी की कमी से बचने के लिए 10 लाख टन चीनी के आयात की भी इजाज़त दी है। इसके साथ ही, चीनी मिलों में नया पेराई सीज़न 15 दिन पहले शुरू करने के लिए कहा गया है, ताकि बाज़ार में चीनी की सप्लाई बिना किसी रुकावट के जारी रहे। इस वजह से अक्टूबर में चीनी का उत्पादन सामान्य से ज़्यादा होने की उम्मीद है। सरकार के मुताबिक, आमतौर पर अक्टूबर में तीन से चार लाख टन चीनी का उत्पादन होता है। इस बार यह 10 लाख टन तक पहुँच सकता है।

एयरपोर्ट पर लंबी लाइनों से छुटकारा

बोर्डिंग पास पर स्टैम्प लगाने की प्रक्रिया खत्म

एजेंसी - नई दिल्ली,

भारत के इंटरनेशनल एयरपोर्ट से विदेश जाने वाले यात्रियों के लिए केंद्र सरकार की ओर से बड़ी राहत की खबर है।

अब इंटरनेशनल यात्रियों को इमिग्रेशन काउंटर पर अपने बोर्डिंग पास पर फिजिकली स्टैम्प लगवाने की ज़रूरत नहीं होगी।

गृह मंत्रालय के तहत काम करने वाले ब्यूरो ऑफ़ इमिग्रेशन ने फैसला किया है कि 1 सितंबर, 2026 से देश के सभी इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर बोर्डिंग पास पर स्टैम्प लगाने की प्रक्रिया हमेशा के लिए बंद कर दी जाएगी। अब यात्री अपने स्मार्टफोन पर डिजिटल ई-बोर्डिंग पास दिखाकर आसानी से इमिग्रेशन क्लीयरेंस ले सकेंगे।

बोर्डिंग पास पर स्टैम्प लगाना क्यों बंद किया गया ?

इमिग्रेशन ब्यूरो को यात्रियों से लगातार शिकायतें मिल रही थीं कि स्टैम्प लगाने की प्रक्रिया से सिस्टम में देरी हो रही थी।

हर बोर्डिंग पास पर स्टैम्प लगाने की वजह से यात्रियों का काउंटर पर काफी समय बर्बाद होता था।

कई बार स्टैम्प ठीक से नहीं लगता था या गलत जगह लग जाता था, जिससे बोर्डिंग गेट पर सिक्योरिटी चेक के दौरान उसे पढ़ने में बहुत दिक्कत होती थी।

1 सितंबर से बदले सिस्टम के मुख्य नियम

लागू होने की तारीख- 1 सितंबर, 2026 से

लागू होने का क्षेत्र-देश के सभी इंटरनेशनल एयरपोर्ट

नया फ़ीचर- मोबाइल पर डिजिटल ई-बोर्डिंग पास मान्य होगा

प्रिंटेड पास रखने वाले- प्रिंटेड बोर्डिंग पास रखा जा सकता है, लेकिन उस पर कोई स्टैम्प नहीं लगाया जाएगा अधिकारियों ने साफ़ किया है कि जो यात्री अभी भी प्रिंटेड बोर्डिंग पास रखना चाहते हैं, वे रख सकते हैं। बस बदलाव यह है कि इमिग्रेशन अधिकारी अब उस कागज़ पर कोई स्टैम्प नहीं लगाएंगे। यह हवाई यात्रा को पूरी तरह से पेपरलेस और डिजिटल बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम है। भारतीय पासपोर्ट धारकों के देश से बाहर जाने और वापस आने पर पासपोर्ट पर फिजिकली स्टैम्प लगाने की प्रक्रिया को भी खत्म करने की योजना है।

इसके लिए अभी कुछ चुने हुए एयरपोर्ट पर एक पायलट प्रोजेक्ट सफलतापूर्वक चलाया जा रहा है। पायलट प्रोजेक्ट पूरा होने के बाद, जल्द ही पूरे देश के एयरपोर्ट पर पासपोर्ट पर बिना स्टैम्प वाला ई-गेट सिस्टम पूरी तरह से लागू कर दिया जाएगा।

पहलगाम हमले के मामले में हाफ़िज़ सईद की मुश्किलें बढ़ीं

भारत हाफ़िज़ सईद को पाकिस्तान से खींचकर लाएगा

एजेंसी - नई दिल्ली,

लश्कर-ए-तैयबा के प्रमुख और खतरनाक आतंकवादी हाफ़िज़ मुहम्मद सईद पर शिकंजा कसता जा रहा है। भारत ने 2025 के पहलगाम आतंकी हमले के मामले में हाफ़िज़ सईद के खिलाफ कानूनी कार्रवाई तेज़ कर दी है। स्पेशल कोर्ट द्वारा गैर-ज़मानती वारंट जारी किए जाने के बाद, नेशनल इन्वेस्टिगेशन एजेंसी (NIA) अब डिप्लोमैटिक चैनलों के ज़रिए लाहौर में सईद को कोर्ट का समन भेजने की प्रक्रिया शुरू कर रही है। सरकारी सूत्रों के मुताबिक, विदेश मंत्रालय (MEA) पाकिस्तान को समन भेजेगा।

जुलाई 2026 में दाखिल सप्लीमेंट्री चार्जशीट में, NIA ने पहलगाम हमले की साजिश में हाफ़िज़ सईद को आरोपी बनाया है। एजेंसी ने उसे व्यक्तिगत रूप से और लश्कर-ए-तैयबा और द रेजिस्टेंस फ्रंट (LRF) के नेता के तौर पर आरोपी बनाया है। चार्जशीट में उस पर भारत के खिलाफ साजिश रचने और युद्ध छेड़ने में भूमिका निभाने का आरोप लगाया गया है।

इसके बाद, जम्मू की एक स्पेशल कोर्ट ने जुलाई में हाफ़िज़ सईद के खिलाफ गैर-ज़मानती वारंट जारी किया था। अब, समन तामील कराने की प्रक्रिया को इस दिशा में एक अहम कदम माना जा रहा है। इसका मकसद यह सुनिश्चित करना है कि सईद को कोर्ट के सामने पेश होने का औपचारिक मौका मिले। अगर समन के बावजूद वह कोर्ट में पेश नहीं होता है और तय कानूनी प्रक्रिया पूरी हो जाती है, तो उसके खिलाफ आगे की कार्रवाई का रास्ता खुल सकता है। भारत उन मामलों में नए क्रिमिनल लॉ के तहत कानूनी कार्यवाही आगे बढ़ाने की तैयारी कर रहा है जिनमें आरोपी देश से बाहर है और उसकी गिरफ्तारी या प्रत्यर्पण संभव नहीं है। भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (ICSC) की धारा 356 में कुछ खास शर्तों के तहत आरोपी पर मुकदमा चलाने का प्रावधान है; इसमें उसकी अनुपस्थिति में जांच, ट्रायल या फैसले का प्रावधान है। सरकार इस बात पर ज़ोर दे रही है कि सईद के खिलाफ उसकी अनुपस्थिति में मुकदमा शुरू करने से पहले सभी ज़रूरी कानूनी औपचारिकताएं पूरी कर ली जाएं। लाहौर में कोर्ट का समन तामील कराने की कोशिश इसी प्रक्रिया का हिस्सा है।

इससे भारत को एक आधिकारिक रिकॉर्ड भी मिलेगा कि उसने आरोपी को भारतीय न्यायिक प्रक्रिया में शामिल होने का मौका देने के लिए सभी उपलब्ध कानूनी और डिप्लोमैटिक चैनलों का इस्तेमाल किया। पहलगाम हमले के मामले में लश्कर प्रमुख हाफ़िज़ सईद के खिलाफ़ मज़बूत कानूनी रिकॉर्ड बनाने की प्रक्रिया का भारत-पाकिस्तान संबंधों और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भी असर पड़ सकता है। सरकारी सूत्रों के मुताबिक, इस कदम से अंतरराष्ट्रीय मंचों पर आतंकवाद के खिलाफ़ भारत की कार्रवाई मज़बूत हो सकती है।

इसका इस्तेमाल टेरर फंडिंग और फाइनेंशियल एक्शन टास्क फोर्स (एफ़एटीएफ़) से जुड़ी चर्चाओं में भी किया जा सकता है। भारत लंबे समय से पाकिस्तान पर अपनी ज़मीन पर मौजूद आतंकवादी नेताओं के खिलाफ़ पर्याप्त कार्रवाई न करने का आरोप लगाता रहा है। पाकिस्तान का कहना है कि टेरर फंडिंग से जुड़े एक मामले में दोषी ठहराए जाने के बाद हाफ़िज़ सईद हिरासत में है। हालाँकि, भारतीय एजेंसियां ??उसे पहलगाम हमले समेत बड़ी आतंकी साजिशों से जोड़ती रही हैं। सरकारी सूत्रों के मुताबिक, मौजूदा प्रक्रिया का व्यापक मकसद उन कानूनी बाधाओं को दूर करना है जिनसे विदेश में रह रहे या कानूनी प्रक्रिया से बच रहे आतंकी आरोपियों को फ़ायदा मिल सकता है। हाफ़िज़ सईद को समन जारी करने से लेकर आगे की संभावित कार्रवाई तक, भारत यह सुनिश्चित करना चाहता है कि पहलगाम हमले के मामले में हर ज़रूरी कानूनी कदम रिकॉर्ड पर हो। अगर वह अदालत के सामने पेश नहीं होता है, तो उसकी अनुपस्थिति में मामले को आगे बढ़ाने का आधार तैयार किया जा सकता है।

मुंबई में फ़ूड सेफ़्टी को लेकर सख़्ती

मैकडॉनल्ड्स समेत 13 फ़ूड आउटलेट्स के लाइसेंस सस्पेंड

एजेंसी - मुंबई,

महाराष्ट्र फ़ूड एंड ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन (रूस्त्रष्ठ) ने फ़ूड सेफ़्टी और साफ़-सफ़ाई के नियमों के कथित उल्लंघन के लिए राज्य में 13 फ़ूड आउटलेट्स के लाइसेंस सस्पेंड कर दिए हैं। इनमें बॉम्बे प्रेसिडेंसी रेडियो क्लब और दक्षिण मुंबई में मैकडॉनल्ड्स का एक आउटलेट शामिल है। अधिकारियों ने शुक्रवार को यह घोषणा की।

मई में सीनियर अफ़सर तुकाराम मुंडे के रूस्त्रष्ठ कमिश्नर का पद संभालने के बाद से, रूस्त्रष्ठ फ़ूड सेफ़्टी और दूसरे नियमों का उल्लंघन करने वाले प्रतिष्ठानों के खिलाफ़ सख़्त कार्रवाई कर रहा है। एक आधिकारिक बयान के अनुसार, रूस्त्रष्ठ ने हाल ही में चलाए गए स्पेशल ड्राइव के दौरान राज्य भर में कुल 89 होटलों, रेस्तरां और फ़ूड शॉप्स का निरीक्षण किया।

इनमें से 71 फ़ूड आउटलेट्स को सुधार के लिए नोटिस जारी किए गए, जबकि 13 प्रतिष्ठानों के फ़ूड बिज़नेस लाइसेंस सस्पेंड कर दिए गए। बयान के अनुसार, 19 अगस्त को किए गए निरीक्षण के दौरान पाया गया कि रेडियो क्लब ने फ़ूड सेफ़्टी और साफ़-सफ़ाई के नियमों का उल्लंघन किया था। क्लब को सस्पेंशन की अवधि के दौरान खाने-पीने की चीज़ों की ख़रीद, बिक्री और वितरण रोकने का निर्देश दिया गया है।

क्लब की रसोई में बड़ी संख्या में ज़िंदा मक्खियाँ और मरे हुए कॉकरोच पाए गए। खाने-पीने की चीज़ें सीधे फ़र्श पर रखी हुई मिलीं और जहाँ खाना तैयार किया जा रहा था, वहाँ छत से प्लास्टिक की शीट फटी हुई देखी गई।

दक्षिण मुंबई के कोलाबा में मेट्रो हाउस में हार्डकैसल रेस्तरां प्राइवेट लिमिटेड द्वारा चलाए जा रहे मैकडॉनल्ड्स रेस्तरां का लाइसेंस भी तत्काल प्रभाव से सस्पेंड कर दिया गया है। 19 अगस्त को किए गए दोबारा निरीक्षण में पाया गया कि पहले जारी किए गए सुधार नोटिस में बताई गई 20 कमियों में से 18 कमियों को ठीक नहीं किया गया था। अधिकारियों ने रेस्तरां में कई कमियाँ देखीं, जिनमें ख़राब टेम्परेचर कंट्रोल डिवाइस, ज़िंदा कॉकरोच, गंदगी और खाने का कचरा शामिल था।

संपादकीय

आर्थिक असर

तेल की कीमतें कुछ समय से स्थिर थीं, लेकिन इज़राइल-ईरान युद्ध के कारण तेल की कीमतों में इतनी तेज़ी आई है कि भारतीय अर्थव्यवस्था में तनाव बढ़ गया है। तेल की कीमतें पिछले पांच महीनों में अपने उच्चतम स्तर - ,78 - पर पहुँच गई हैं। डर यह है कि कहीं बढ़ती तेल की कीमतों के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था लड़खड़ा न जाए? कुछ विश्लेषक यह कहकर भारतीय बाज़ारों को मंदी की ओर धकेल रहे हैं कि तेल की कीमत ,150 तक पहुँच जाएगी। ,150 का अनुमान बहुत ज़्यादा हो सकता है, लेकिन विश्लेषकों का कहना है कि तत्काल समाधान की कोई संभावना नहीं है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प समाधान खोजने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन इज़राइल और ईरान अब पीछे हटने को तैयार नहीं दिख रहे हैं।

ऐसा लगता है कि दोनों एक-दूसरे को गंभीर नुकसान पहुँचाए बिना शांत नहीं होंगे। इज़राइल ने ईरान के परमाणु सेटअप पर हमला करके हलचल मचा दी है। इसका सीधा असर पश्चिम एशिया से होने वाली तेल आपूर्ति पर पड़ेगा। सोमवार को लिखते समय, तेल की कीमत ,78 (शनिवार) से घटकर ,73.67 प्रति बैरल हो गई है। इज़राइल-ईरान युद्ध से पूरी दुनिया हिल गई है। कच्चे तेल के व्यापार से जुड़े सूत्रों का कहना है कि अगर इज़राइल और ईरान के बीच युद्ध लंबे समय तक चलता है, तो तेल की आपूर्ति बड़े पैमाने पर बाधित होगी, जिससे तेल की कीमत ,95 प्रति बैरल तक पहुँच सकती है। हालाँकि, कुछ विश्लेषकों का अनुमान है कि तेल की कीमत ,150 को पार कर सकती है। जैसे ही बाज़ार को प्रभावित करने वाली कोई घटना होती है, विश्लेषक सामने आ जाते हैं। कुछ सही होते हैं, जबकि अन्य केवल अंदाज़े लगाते हैं। भारत में लगभग 260 मिलियन (26 करोड़) दोपहिया वाहन और 50 मिलियन (पाँच करोड़) चार-पहिया वाहन हैं। अगर पेट्रोल और डीज़ल की कीमतें बढ़ती हैं, तो सामान ढोने वाले वाहनों की लागत भी बढ़ेगी, जिससे रोज़मर्रा की ज़रूरतों की कीमतें भी बदल जाएँगी।

सब्ज़ियों और दूध जैसी चीज़ों की कीमतों पर भी तुरंत असर पड़ सकता है। अगर कच्चे तेल की कीमत ,80 को पार कर जाती है, तो भारत में पेट्रोल की कीमत सीधे पाँच रुपये बढ़ सकती है। मध्यम वर्ग का मासिक खर्च का बजट बिगड़ जाएगा। बाज़ार के जानकारों का कहना है कि भारत आने वाली 2.5 मिलियन बैरल तेल की खेप फँस गई है। इस युद्ध के लंबे समय तक चलने की भी संभावना है और दूसरे देश भी इसमें शामिल होने के बारे में सोच रहे हैं।

अद्भुत और अनोखी त्वचा वाले जानवर

इंसानों समेत हर जानवर के लिए त्वचा एक सुरक्षा कवच का काम करती है। सोचिए, अगर हमारे शरीर पर त्वचा की परत न होती तो हम कैसे दिखते? हर जानवर की त्वचा उसे दूसरों से अलग पहचान देती है। प्रकृति ने हर जानवर की त्वचा की सुरक्षा के लिए अलग-अलग इंतजाम किए हैं, जो उनकी रक्षा और जीवन के लिए ज़रूरी हैं। जानवरों के शरीर पर फर और घने बाल होते हैं, जो उनकी सुरक्षा में अहम भूमिका निभाते हैं। एक समय इंसानों के शरीर पर भी घने बाल हुआ करते थे, जो धीरे-धीरे कम हो गए, लेकिन आज भी हमें ऐसे लोग दिख जाते हैं जिनके शरीर पर घने बाल होते हैं। छूने का एहसास हमारे लिए बहुत ज़रूरी है और यह त्वचा के ज़रिए ही होता है। लेकिन जानवरों की दुनिया में त्वचा कई तरह की होती है। कुछ जानवरों की त्वचा तो वाकई अद्भुत होती है।

जब हम मगरमच्छ को देखते हैं, तो पाते हैं कि उसके शरीर पर एक सख्त परत होती है। यह परत उसके लिए सुरक्षा कवच का काम करती है और साथ ही एक हथियार भी है। यह इतनी मज़बूत होती है कि इससे जूते और कपड़े भी बनाए जाते हैं, लेकिन यह त्वचा वैसी खुरदरी नहीं होती जैसी दिखती है; असल में यह दुनिया के किसी भी दूसरे जानवर की त्वचा से ज़्यादा संवेदनशील होती है। प्रकृति ने मगरमच्छ के मुँह और दाँतों के पास कई सेंसर लगाए हैं; इनमें से उसके निचले हिस्से की त्वचा किसी भी दूसरे जानवर की तुलना में ज़्यादा मुलायम और चिकनी होती है, साथ ही संवेदनशील भी। इसके ज़रिए वह पानी में होने वाली हल्की-फुल्की हलचल का भी पता लगा सकता है। मगरमच्छ अंडे देने वाले जानवर हैं और जब अंडे सही ढंग से दिए जाते हैं, तो मादा मगरमच्छ अपने मुँह से अंडे को तोड़ती है और बच्चे को मुँह में दबाकर पानी में ले जाती है। फिर वह इस बात का ध्यान रखती है कि उसके बच्चे को कोई नुकसान न पहुँचे।

इसके अलावा, वैज्ञानिकों का मानना ? ?है कि प्रकृति ने उसे केमिकल का पता लगाने की क्षमता दी है, जिससे वह अपने शिकार का पता लगा सकता है। मगरमच्छ के अलावा गैंडे की त्वचा भी मोटी होती है, जबकि व्हेल शार्क की त्वचा भी पंद्रह सेंटीमीटर मोटी होती है। लेकिन जब स्पर्म व्हेल की बात आती है, तो वह सभी जानवरों में सबसे मोटी त्वचा वाला जानवर साबित होती है। हालाँकि, स्पर्म व्हेल की न सिर्फ़ त्वचा मोटी होती है, बल्कि उसके दाँत और दिमाग भी दूसरों के मुकाबले बड़े होते हैं। मेगालोडन शार्क के दाँत सत्रह सेंटीमीटर लंबे होते हैं।

कुछ जानवरों की त्वचा सख्त और मोटी होती है जो प्रकृति ने उन्हें उनकी सुरक्षा के लिए दी है, जबकि कुछ जानवरों को प्रकृति ने बहुत मुलायम त्वचा दी है, जिनमें अफ़्रीकी चूहा भी शामिल है। लेकिन अफ़्रीकी स्पाइनी चूहे की त्वचा अद्भुत होती है। अगर हमारे शरीर की त्वचा निकल जाए, तो वह दोबारा नहीं उगती। लेकिन यह चूहा अपनी त्वचा खुद उगा सकता है। इसके शरीर के घाव एक ही दिन में भर जाते हैं। इसलिए, अगर यह किसी शिकारी के हाथ में आ जाए और इसकी त्वचा निकल जाए, तो इससे कोई खास फ़र्क नहीं पड़ता। ऑक्टोपस, कटलफ़िशि और उनसे जुड़े जीवों में कई अद्भुत बातें होती हैं। वे शिकारियों से बचने और शिकार करने के लिए समुद्र के जीवों के साथ बहुत अच्छे से घुल-मिल जाते हैं। नतीजतन, शिकारी और शिकार उनकी मौजूदगी का पता नहीं लगा पाते। हालाँकि, दुनिया का कोई भी जानवर सेफ़लोपोड परिवार के जानवरों की तरह लुका-छिपी का खेल नहीं खेल सकता। वे बैकग्राउंड में पूरी तरह से गायब हो जाते हैं और आज भी विज्ञान यह नहीं समझ पाया है कि वे ऐसा कैसे करते हैं। तो, वैज्ञानिक जानते हैं और उन्होंने यह भी दिखाया है कि वे रंग और रूप कैसे बदलते हैं, लेकिन असली सवाल यह है कि इन जानवरों को अपने आस-पास के माहौल के बारे में जानकारी कैसे मिलती है जिससे वे वैसा रूप ले पाते हैं, क्योंकि इन जानवरों को रंगों की ज़्यादा समझ नहीं होती। वे कलर ब्लाइंड होते हैं।

ऑक्टोपस और कटलफ़िशि बैकग्राउंड के रंग में घुल-मिल जाते हैं, लेकिन मज़ेदार बात यह है कि वे उस रंग को देख नहीं सकते। इंसान हज़ारों रंग देख सकते हैं, लेकिन जानवर नहीं। वैज्ञानिकों का मानना ? ?है कि वे अपने शरीर के ज़रिए दुनिया को देखते हैं, इसलिए उनकी त्वचा उनके लिए आँखों का काम करती है। ऑस्ट्रेलिया के रेगिस्तान में मोलोच नाम का गिरगिट पाया जाता है। इसके शरीर की बनावट को देखते हुए इसे थॉर्नी डेविल (काँटेदार शैतान) कहा जाता है क्योंकि इसके शरीर पर काँटों वाली ढाल होती है। दूसरे जानवर इसे छेड़ने की हिम्मत नहीं करते क्योंकि इसके शरीर पर बहुत खतरनाक काँटे होते हैं। हालाँकि, यह जानवर ऑस्ट्रेलिया के रेगिस्तान में सिर्फ़ इसलिए ज़िंदा रह पाया है क्योंकि इसके पास प्राकृतिक सुरक्षा कवच है। यह चींटियाँ खाता है। फिर सवाल उठता है कि यह इस रेगिस्तान में पानी की कमी को कैसे पूरा करता है।

वैज्ञानिकों का कहना है कि इसे अपने पैरों से पानी मिलता है। हम इसे एक जीवित पेपर टॉवल कह सकते हैं। जैसे जब पेपर टॉवल का एक सिरा पानी में छुआ जाता है, तो पेपर धीरे-धीरे पानी सोख लेता है। इस गिरगिट की त्वचा में भी यही गुण होता है। इस तरह, यह गिरगिट सूप में खड़ा हो सकता है और बिना मुँह लगाए उसे निगल सकता है, जो हम नहीं कर सकते। चूँकि अफ़्रीका एक बहुत सूखा और गर्म इलाका है, इसलिए जिराफ़ जैसे जानवर के लिए यह एक चुनौती रही होगी। क्योंकि शेर ठंडक पाने के लिए छाया में आराम करता है। हाथी अपने शरीर पर कीचड़ लगाता है और दरियाई घोड़ा (हिप्पोपोटामस) पूरे दिन पानी में रहता है। लेकिन जिराफ़ ऐसा कुछ नहीं कर सकता। यह सोचना स्वाभाविक है कि दुनिया का सबसे लंबा जानवर इस माहौल में खुद को ठंडा कैसे रखता है। लेकिन प्रकृति ने उसे ऊँट की तरह कुछ खास खूबियाँ भी दी हैं। सबसे पहली बात, जिराफ़ को पसीना नहीं आता और न ही वह हाँफता है। इस माहौल में शरीर में पानी जमा करके रखना एक मुश्किल काम है, और खासकर ऐसी जगहों पर जहाँ पानी में खतरनाक मगरमच्छ रहते हों, इस लंबे जानवर के लिए पानी पीना भी खतरनाक हो सकता है। ऐसे में, जिराफ़ अपने शरीर का तापमान बदलकर उसे ठंडा रखता है। उसके शरीर पर बने धब्बे इसमें अहम भूमिका निभाते हैं।

वैज्ञानिकों के अनुसार, इसकी धारियां असल में थर्मल विंडो (गर्मी को बाहर निकालने वाली जगह) होती हैं। इनके आस-पास बड़ी रक्त वाहिकाएं होती हैं, जिनमें एक जटिल सिस्टम होता है। इन्हीं धारियों के ज़रिए यह गर्म खून को दूसरी जगहों पर भेजता है और अपने शरीर का तापमान बनाए रखता है। इसी वजह से, यह जानवर अफ्रीका की भीषण गर्मी में झुलसता नहीं है; इसका शरीर इसके लिए एयर कंडीशनर की तरह काम करता है। जिराफ़ की तरह, ज़ेबरा भी एक अद्भुत जानवर है। इसके शरीर पर बनी धारियां न सिर्फ़ शिकारियों को भ्रमित करने का काम करती हैं, बल्कि धारियां अलग-अलग होने की वजह से ये एक-दूसरे को पहचान भी सकते हैं। हालाँकि, वैज्ञानिकों की हालिया जांच से पता चला है कि ये धारियां उन्हें कीड़ों और सूक्ष्म परजीवियों से बचाती हैं। भूरे या काले घोड़ों की तुलना में, नीले-काले रंग के घोड़ों को स्किन कैंसर का खतरा ज़्यादा होता है क्योंकि उनका रंग कीड़ों को आकर्षित करता है। ज़ेबरा के शरीर पर काली और सफ़ेद धारियों का पैटर्न उन्हें कीड़ों से बचाता है क्योंकि कीड़े इस पैटर्न से निकलने वाली रोशनी में ठीक से अंतर नहीं कर पाते और इस तरह ज़ेबरा खून चूसने वाले कीड़ों से बच जाता है। बोर्नियो में पाया जाने वाला चपटे सिर वाला मेंढक किसी भी तरह की आवाज़ नहीं निकाल पाता क्योंकि प्रकृति ने उसे गला नहीं दिया है। धरती पर मेंढकों की कुछ ही ऐसी प्रजातियां हैं जो अपनी त्वचा से सांस लेती हैं। यह मेंढक उन्हीं में से एक है। यह ठंडे पानी में रहना पसंद करता है क्योंकि ठंडे पानी में ऑक्सीजन की मात्रा ज़्यादा होती है। गिरगिट की रंग बदलने की क्षमता के बारे में तो सभी जानते हैं। लेकिन हाल ही में यह पता चला है कि गिरगिट अपने आस-पास मौजूद शिकारियों को पहचानकर खुद को छिपाने का काम करते हैं। वे छिपने में अपनी ऊर्जा बर्बाद करने के लिए शिकारी की देखने की क्षमता का इस्तेमाल करते हैं। वे जानते हैं कि सांप ठीक से देख नहीं सकते, इसलिए वे उनसे छिपने की कोशिश नहीं करते। लेकिन जब पक्षियों की बात आती है, तो वे बैकग्राउंड के साथ घुल-मिल जाने की कोशिश करते हैं। अमेरिका के तटीय इलाकों में पाया जाने वाला घोंघे जैसा एक जीव ग्रीन सी स्लग के नाम से जाना जाता है। इसका भोजन शैवाल है। शैवाल की एक खुराक लेने के बाद, इसे सूरज की रोशनी से ऊर्जा मिलती है। इसके लिए यह शैवाल का ही इस्तेमाल करता है। इसे शैवाल से क्लोरोप्लास्ट मिलते हैं और यह उन्हें अपनी त्वचा की कोशिकाओं में जमा कर लेता है। जिसकी वजह से इसे प्रकाश संश्लेषण का लाभ मिलता है। हालाँकि, यह जितना क्लोरोफिल बनाता है, उसकी मात्रा वैज्ञानिकों की समझ से परे है। वैज्ञानिक यह नहीं समझ पा रहे हैं कि यह शैवाल के ष्ठह्र से इतना मेल कैसे खा सकता है कि खुद क्लोरोफिल बनाने लगे। एक बार जब इस जीव को कुछ क्लोरोप्लास्ट मिल जाते हैं, तो यह खुद ही जीवित रह सकता है।

बच्चों में अपराध का बढ़ना

दिल्ली के पास गुरुग्राम में एक ऐसी घटना हुई जिसने पूरे देश में हलचल मचा दी। वहाँ एक स्कूल में एक छोटे बच्चे की बेरहमी से हत्या कर दी गई। जांच में पता चला कि 11वीं कक्षा के एक छात्र ने उस मासूम की हत्या की थी। लेकिन जांच में जो वजह सामने आई, वह और भी चौंकाने वाली थी; 11वीं कक्षा के छात्र ने यह हरकत इसलिए की ताकि परीक्षाएं टल जाएं। यह घटना समाज के लिए एक चेतावनी है। सवाल हमारी आने वाली पीढ़ी के निर्माण पर है। इससे पहले, हमने कॉलेजों में रैगिंग की घटनाओं के बारे में बहुत कुछ सुना है। पहले रैगिंग में होने वाली मासूम मस्ती खत्म हो गई और दादागिरी शुरू हो गई, और अब मामला गुंडागर्दी से बढ़कर हत्या तक पहुंच गया है, और वह भी कॉलेज में नहीं, बल्कि स्कूल कैंपस में...!!

इससे पहले, जब निर्भया कांड हुआ था, तो उसमें भी एक नाबालिग आरोपी था। इतनी कम उम्र में इतनी क्रूरता कहाँ से आई? एक सर्वे के अनुसार, आधे से ज़्यादा, यानी लगभग 60 प्रतिशत किशोरों का मानना है कि नियम तोड़ने के लिए ही बनते हैं। दूसरी ओर, 66 प्रतिशत, यानी स्कूल में आधे से ज़्यादा बच्चे दूसरे छात्रों द्वारा की जाने वाली दादागिरी का शिकार होते हैं। ये आंकड़े साफ करते हैं कि आजकल किशोरावस्था में दूसरों को परेशान करने और दादागिरी दिखाने का कल्चर पनप गया है। किशोरों को इस तरह दूसरों को परेशान करने में मज़ा आता है। लेकिन क्या यह सच में मज़ा है? इस सोच के लिए कौन ज़िम्मेदार है?

पहला सवाल यह है कि इसके पीछे क्या वजह है। जितने लोग, उतनी बातें। कुछ लोग इसके लिए शिक्षा के निजीकरण और व्यवसायीकरण को ज़िम्मेदार मानते हैं। उनके अनुसार, पहले स्कूलों में शिक्षा दी जाती थी, अब जो लोग डोनेशन देते हैं, उन्हें सुविधाएं मिलती हैं। यहाँ तक कि बच्चों में भी पैसे की ताकत दिखाने का जुनून होता है। कुछ लोगों का यह भी मानना ? ?है कि ऐसे छात्र स्कूल या कॉलेज पढ़ने नहीं, बल्कि अपनी दादागिरी दिखाने जाते हैं। ऐसे छात्रों से न केवल दूसरे छात्र, बल्कि शिक्षक, प्रोफेसर और यहाँ तक कि प्रिंसिपल भी परेशान रहते हैं। अगर कोई शिक्षक स्कूल में थोड़ी सख्ती भी बरते, तो उनके साथ भी ऐसा हो सकता है। लेकिन यहाँ यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि ऐसे शिक्षकों को उनके माता-पिता का समर्थन नहीं मिलता क्योंकि ऐसा होता है। छात्रों के माता-पिता सिर्फ़ अपने बच्चों का ध्यान रखते हैं, जो अच्छी बात है, लेकिन क्या उनकी देखभाल में ज़रूरत से ज़्यादा सुरक्षात्मक होना ज़रूरी है? बच्चे को यह कौन सिखाएगा कि वह कब गलत है, और गलत कामों के नतीजों का सामना करने की हिम्मत कैसे जुटाए? अब दूसरा सवाल यह है कि क्या इसके लिए सिर्फ़ शिक्षा ही ज़िम्मेदार है? क्योंकि बच्चे को पहली शिक्षा घर से ही मिलती है। हाँ, यह सच है कि बच्चों और किशोरों को सही दिशा देने में टीचर की भूमिका अहम होती है। लेकिन घर का माहौल भी उतना ही ज़रूरी है। क्या आज के दौर में आदर्श, मूल्य, यानी नैतिक शिक्षा बची है? आज के समय की बदकिस्मती यह है कि ज़्यादातर बच्चों को शुरू से ही सिर्फ़ कॉम्पिटिशन के लिए तैयार किया जाता है। लगता है कि आज के बच्चे का बचपन कहीं खो गया है। ऐसे में, उसके दबे हुए जज़्बात या हरकतें मानसिक रूप से हिंसा का रूप ले सकती हैं। तो क्या यह बच्चे की गलती है या उस दबाव की, जिसकी वजह से उसमें कोई मानसिक विकार पैदा हो जाता है? एक्सपर्ट साइकियाट्रिस्ट का मानना ? ?है कि जब कोई बच्चा हत्या जैसा बेरहम काम करता है, तो इसकी वजह उसका मानसिक विकार ही होता है। इसके अलावा, किसी बच्चे या किशोर के लिए अपनी उम्र के हिसाब से हत्या जैसा अपराध करने की योजना बनाना मुमकिन नहीं है। और ऐसे में, बच्चे के व्यवहार से यह समझकर उसे सही रास्ते पर लाया जा सकता है। लेकिन यह ज़िम्मेदारी किसकी है? टीचर माता-पिता को दोष देते हैं और माता-पिता स्कूल को। आज की जीवनशैली में, माता-पिता दोनों ही पैसे कमाने की होड़ में लगे हैं। और अगर वजह पूछो, तो वे कहेंगे कि जब हम पैसे कमाएँगे, तभी तो बच्चे को सुख-सुविधाओं वाली अच्छी ज़िंदगी दे पाएँगे। लेकिन क्या अच्छी ज़िंदगी सिर्फ़ सुख-सुविधाओं से मिलती है? आपका बच्चा हमेशा सबसे आगे रहे? क्या हर कॉम्पिटिशन जीतने पर ही उसकी ज़िंदगी अच्छी मानी जाएगी? यह सवाल समझने लायक है। क्या हम मानते हैं कि गांधी बापू, सरदार पटेल, अब्दुल कलाम, आइंस्टीन - ये सभी अपनी पढ़ाई में सबसे आगे थे? एक घटना इस बात को साबित करती है। जब आइंस्टीन बच्चे थे, तो उनकी माँ ने उन्हें स्कूल भेजा। लेकिन स्कूल ने आइंस्टीन को मानसिक रूप से कमज़ोर समझकर वापस भेज दिया। उन्होंने साथ में एक चिट्ठी भी दी। जब उनकी माँ ने वह चिट्ठी पढ़ी, तो उनकी आँखों में आँसू आ गए। नन्हे आइंस्टीन ने पूछा कि माँ, क्या हुआ? तब उनकी माँ ने कहा, ﾑबेटा, तुम इतने होशियार हो कि तुम्हारे टीचर तुम्हें पढ़ा नहीं सकते। अब से मैं तुम्हें पढ़ाऊँगी।ﾒ जब आइंस्टीन बड़े हुए और उन्होंने वह चिट्ठी पढ़ी, तो वे भी भावुक हो गए। उस चिट्ठी में लिखा था कि आपके बच्चे में समझदारी नहीं है, इसलिए अब से उसे स्कूल न भेजें। वही आइंस्टीन, जिसे टीचर मानसिक रूप से कमज़ोर बच्चा समझते थे, अपनी थ्योरी से दुनिया को हैरान कर दिया। उन्होंने एक नए वैज्ञानिक युग की शुरुआत की। क्या इस कहानी का सार बताने की ज़रूरत है? साइकोलॉजी की थ्योरी कहती है कि अगर माता-पिता और टीचर मिलकर सही तालमेल के साथ काम करें, तो बच्चे कुछ भी गलत करने से पहले सौ बार सोचेंगे। मन में सम्मान का भाव होना चाहिए। इसीलिए, अपने बच्चे को एक स्वस्थ इंसान बनाने के लिए आज़ाद लेकिन ज़िम्मेदार माहौल बनाना ज़रूरी है। एक माता-पिता के तौर पर, आपको नहीं पता कि आपकी छोटी सी गलती बच्चे पर कैसा असर डालेगी या उसका व्यक्तित्व कैसा बनेगा। लेकिन उस पर हर काम में सबसे अच्छा करने का बोझ न डालें; यह बोझ उसकी चंचलता के साथ-साथ उसका बचपन भी छीन सकता है।

ऐसी टेक्नोलॉजी जो कभी साइंस-फ़िक्शन लगती थी

एक सदी पहले, जब लोग आज इस्तेमाल होने वाली टेक्नोलॉजी के बारे में सोचते थे, तो यह साइंस-फ़िक्शन जैसा लगता था। एक समय था जब टेलीविज़न, इंटरनेट और मोबाइल जैसी चीज़ों को लग्ज़री आइटम माना जाता था। आज ये चीज़ें हमारी ज़िंदगी का आम हिस्सा बन गई हैं। एक समय था जब वीडियो गेम को अमीरों के लिए लग्ज़री आइटम माना जाता था। एक साधारण गेम खेलने के लिए भी साइबर कैफ़े जाना पड़ता था। आज, कई मॉडर्न गेम हमारे मोबाइल पर उंगलियों के इशारे पर खेले जा सकते हैं। साल 2000 शुरू होने से पहले, पोर्टेबल गेमिंग का दौर था। ज़्यादातर लोग गेमबॉय जैसे गेम का मज़ा लेते थे। उस समय, पोकेमॉन ने पूरी दुनिया में धूम मचा दी थी।

हालाँकि, एक दशक बाद ही पोर्टेबल गेमिंग का आइडिया हकीकत बना। फिर, गेम के शौकीनों को ह्व64 मिला, जो एक ऐसी टेक्नोलॉजी थी जिसने टच स्क्रीन के साथ-साथ बेहतरीन अनुभव भी दिया। सोनी ने गेमिंग की दुनिया में अपना प्लेस्टेशन पेश किया। इसने दो मॉडल लाकर सबको हैरान कर दिया। इलेक्ट्रिक कारों पर कई दशकों से चर्चा हो रही है, और कहा जाता है कि इनमें प्रदूषण कम करने की क्षमता है। 1999 के दौर में, इलेक्ट्रिक कारों को एक सपने जैसी टेक्नोलॉजी माना जाता था। आजकल हाइब्रिड कारों पर चर्चा हो रही है। हालाँकि इलेक्ट्रिक कारें प्रदूषण से छुटकारा दिला सकती हैं, लेकिन उन्हें रिचार्ज करने की समस्या को हल करने की ज़रूरत है क्योंकि उन्हें हर पचास से सौ मील पर रिचार्ज करने की ज़रूरत होती है। हालाँकि, आज हम उस दिशा में बढ़ रहे हैं और आने वाले समय में इलेक्ट्रिक कारों का सपना भी सच हो सकता है। 1999 के दौर में, अगर आपके पास आठ गीगाबाइट की हार्ड ड्राइव होती थी, तो आपको बहुत स्मार्ट और बुद्धिमान माना जाता था। उस समय, कंप्यूटर गेम एक ही CD-ROरू में उपलब्ध होते थे। उस समय, विशेषज्ञों ने भविष्यवाणी की थी कि साल 2000 में, तीस GB की हार्ड ड्राइव सिर्फ़ 200 में उपलब्ध होगी। वे ऐसी भविष्यवाणियाँ करते थे। उस समय, छोटी ड्राइव का होना कल्पना की बात मानी जाती थी, आज यह सब अजीब लगता है। एक समय था जब इंटरनेट को बहुत महंगी टेक्नोलॉजी माना जाता था और इसका इस्तेमाल कुछ ही कंपनियाँ करती थीं। 1999 में, 56द्म मॉडेम उपलब्ध था जिसके ज़रिए इंटरनेट का इस्तेमाल किया जा सकता था। यह मॉडेम भी सिर्फ़ अमीर लोगों के लिए ही सस्ता था, लेकिन मिडिल क्लास के लिए यह अभी भी दूर की चीज़ थी। आज लोग आसानी से मोबाइल पर इंटरनेट इस्तेमाल कर रहे हैं। हालाँकि, एक समय था जब ये चीज़ें लग्ज़री मानी जाती थीं। एक समय ऐसा भी था जब YouTube पर दस मिनट का वीडियो देखने में भी एक घंटा लग जाता था, जबकि आज फ़िल्में ऑनलाइन देखी जा सकती हैं। एक समय था जब iPhone जैसी चीज़ एक कल्पना लगती थी। हालाँकि, पिछले दो दशकों में चीज़ें बहुत बदल गई हैं और इलेक्ट्रॉनिक्स की दुनिया में क्रांति आ गई है। एक समय जब सेलफ़ोन नई चीज़ हुआ करते थे, तो यह स्वाभाविक है कि द्वक्कद्धश्ठ्ठद्र कल्पना की बात लगती थी। आज द्वक्कद्धश्ठ्ठद्र की वजह से कई चीज़ें आसान हो गई हैं। **Google Android** और **PalmPrey** जैसी **WebOS** सेवाएँ आज कई चीज़ें उपलब्ध करा रही हैं। आज वीडियो कॉलिंग एक आम बात है जो ज़्यादातर डिवाइस पर उपलब्ध है। यह कुछ ऐसा था जो दो दशक पहले एक सपने जैसा लगता था क्योंकि तब मोबाइल फ़ोन बहुत खास चीज़ हुआ करते थे। **Nintendo V** को कभी एक सपनों की टेक्नोलॉजी माना जाता था, जिसकी ग्राफ़िक क्वालिटी उतनी अच्छी नहीं थी। हालाँकि, अपने समय में यह बहुत बिका भी था।

Nintendo V अपने समय में बहुत हिट रहा था। जब यह 1999 में बाज़ार में आया, तो इसे सबसे अच्छा सिस्टम माना गया। उस समय गेमिंग शुरुआती दौर में थी, लेकिन आज, दो दशक बाद, यह बहुत ऊँचे स्तर पर पहुँच गई है। 1999 के दौर में टेलीविज़न ही लोगों के लिए एक नई चीज़ थी। उस समय लाइव टीवी कल्पना की बात थी। उस समय 640-480 का पिक्सेल रिज़ॉल्यूशन बहुत अच्छी बात मानी जाती थी। आज हम ।ष्ठ टेलीविज़न तक पहुँच गए हैं। आज हाई-डेफ़िनिशन टेलीविज़न सेट पहले की तुलना में बहुत सस्ते उपलब्ध हैं। आज पूरी दुनिया में ।ष्ठ टेलीविज़न सेट की माँग बढ़ रही है। एक समय फ़ोन पर गाने सुनने की सुविधा लोगों को अजीब लगती थी क्योंकि उस समय कैसेट और **DVD** का ज़माना था; जब फ़ोन पर मनपसंद गाने सुनने की सुविधा कल्पना की बात थी, तब द्वक्कश्स्त्र ने उस कल्पना को साकार करने का काम किया, जिसमें स्रूक्क प्लेयर की सुविधा थी। द्वक्कश्स्त्र ने उस समय स्रूक्क फ़ॉर्मेट में क्रांति लाने का काम किया। उस समय गाने सुनने के लिए ष्टष्ठ का इस्तेमाल होता था, जबकि आज ये मोबाइल में उपलब्ध हैं। 1999 के दौर में वायरलेस टेक्नोलॉजी अभी शुरुआती स्टेज में थी। उस समय सेलफ़ोन आम तो थे, लेकिन उन्हें हाई-क्लास चीज़ माना जाता था। उनका साइज़ आज के सेलफ़ोन के मुकाबले काफी बड़ा होता था। उस समय टेक्स्ट मैसेज उतने पॉपुलर नहीं थे जितने आज हैं। उस समय फ़ोन पर डेटा प्लान की बात बस एक संभावना मानी जाती थी।

उस समय इंटरनेट हर जगह और हर किसी के लिए उपलब्ध नहीं था। वह लोकल एरिया नेटवर्किंग का दौर था और उस समय सभी को नेटवर्क से जोड़ने का विचार एक सपने जैसा लगता था।

उस समय लोग उसी टेक्नोलॉजी से संतुष्ट थे और वायरलेस टेक्नोलॉजी के बारे में कोई सोच भी नहीं थी, जो जल्द ही आम होने वाली थी। आज हम वाई-फाई के दौर में जी रहे हैं, जहाँ कई मोबाइल बिना किसी तार के आसानी से एक-दूसरे से जुड़ सकते हैं और हर कोई इंटरनेट कनेक्शन के बिना इंटरनेट का मज़ा ले सकता है।

संक्षिप्त समाचार

प्रिंस हैरी शाही भूमिकाओं के बिना ब्रिटेन लौटेंगे; भारतीय महिला को इस्राइल में अच्छी नागरिकता सम्मान

लंदन, एजेंसी। ब्रिटेन के प्रिंस हैरी और उनकी पत्नी मेघन ने यूनाइटेड किंगडम लौटने का फैसला किया है। हालांकि, वे शाही परिवार के कामकाजी सदस्यों के रूप में अपनी भूमिकाएं फिर से शुरू नहीं करेंगे। किंग चार्ल्स को रविवार को इस निर्णय के बारे में सूचित किया गया। हालांकि, पिछले महीने दंपती की यूके यात्रा के दौरान उन्हें इस बारे में नहीं बताया गया था। डेली टेलीग्राफ ने यह खबर सबसे पहले प्रकाशित की है। अखबार के अनुसार, हैरी और मेघन के बच्चे, प्रिंस आर्ची (7) और प्रिंसेस लिलिबेट (5), ब्रिटिश स्कूलों में पहले ही दाखिला ले चुके हैं। वे सितंबर में अपनी कक्षाएं शुरू करेंगे। यह निर्णय दंपती द्वारा अपनी शाही जिम्मेदारियां छोड़ने के छह साल से अधिक समय बाद आया है। उन्होंने आकर्षक मीडिया अनुबंधों को आगे बढ़ाने के लिए कैलिफोर्निया का रुख किया था। ब्रिटेन लौटने से किंग चार्ल्स को अपने पोते-पोतियों से अधिक मिलने का अवसर मिलेगा। किंग चार्ल्स एक अज्ञात प्रकार के कैंसर का इलाज करा रहे हैं। दंपती ने छह साल से अधिक समय पहले अपने शाही कर्तव्यों को त्याग दिया था। वे कैलिफोर्निया में बस गए थे। इस वापसी से परिवार के संबंधों में मजबूती आ सकती है।

इस्राइल में देखभाल करने वाली भारतीय महिला को अच्छी नागरिकता का सम्मान

यरुशलम, एजेंसी। इस्राइल पुलिस ने एक भारतीय महिला को अच्छी नागरिकता के लिए प्रशंसा प्रमाण पत्र दिया है। देखभाल करने वाली इस महिला ने कार्मेल क्षेत्र में 95 वर्षीय होलोकॉस्ट पीड़िता को ठगी के प्रयास से बचाया था। बुधवार को तटीय जिला पुलिस मुख्यालय में आयोजित एक समारोह में हाइफा पुलिस स्टेशन के जांचकर्ताओं ने हीरा (हीराबेन) को यह प्रमाण पत्र प्रदान किया। स्थानीय मीडिया के अनुसार, हीराबेन उस बुजुर्ग महिला की नर्सिंग देखभालकर्ता यानी केयरगिवर के रूप में काम कर रही हैं। इजरायल में कुछ ही महीने रहने के बावजूद, हीराबेन ने सूझबूझ और साहस का परिचय दिया। उन्होंने महिला को एक कथित धोखेबाज से बचाया, जो क्लैलिट हेल्थ सर्विसेज की नर्स बनकर उनके अपार्टमेंट में आया था। देखभालकर्ता ने शांत रहते हुए घटना को दर्ज किया, संदिग्ध को बुजुर्ग महिला के पास जाने से रोका और पुलिस को सूचित किया। इस मामले में आरोप पत्र दायर किया गया है और संदिग्ध की हिरासत दो दिन पहले कानूनी कार्रवाई पूरी होने तक बढ़ा दी गई थी। जांचकर्ता नोफर पाज़ ने बुजुर्ग महिला और उनके परिवार की उपस्थिति में हीराबेन को धन्यवाद दिया।

सफारी के दौरान हेलीकॉप्टर क्रैश, पांच अमेरिकी समेत सात लोगों की मौत

नैरोबी, एजेंसी। केन्या के उत्तरी हिस्से में बुधवार सुबह सफारी के दौरान एक हेलीकॉप्टर दुर्घटनाग्रस्त हो गया। हादसे में हेलीकॉप्टर में सवार सभी सात लोगों की मौत हो गई। स्थानीय पुलिस और अमेरिकी विदेश विभाग के अनुसार, मृतकों में पांच अमेरिकी नागरिक शामिल थे। हेलीकॉप्टर सुबह 9-13 बजे लॉइसाबा कंजरवेंसी से साम्बुरु काउंटी के इवासो न्यिरो इलाके की ओर जा रहा था। केन्या नागरिक उड्डयन प्राधिकरण के अनुसार, हेलीकॉप्टर में कुल सात लोग सवार थे। इनमें छह यात्री और एक पायलट था। उड़ान के दौरान हेलीकॉप्टर हादसे का शिकार हो गया। साम्बुरु के पुलिस कमांडर डेविड नकोरोई ने बुधवार देर शाम पुष्टि की कि हेलीकॉप्टर में सवार सभी सात लोगों की मौत हो गई है। हादसे के कारणों की जांच शुरू कर दी गई है। अमेरिकी विदेश विभाग ने बताया कि मृतकों में पांच अमेरिकी नागरिक थे। अमेरिकी दूतावास स्थानीय अधिकारियों के संपर्क में है और पीड़ितों से जुड़े लोगों को जरूरी कांसुलर सहायता उपलब्ध करा रहा है। मृतकों की आधिकारिक पहचान सार्वजनिक नहीं की गई है। हालांकि, अमेरिका के फ्लोरिडा स्थित एक स्थानीय टीवी स्टेशन ने बताया कि मृतकों में जोस सुआरेज भी शामिल थे, जिनकी उम्र 55 वर्ष थी और वह टेलीमुंडो के फ्लोरिडा स्थित कई स्टेशनों के अध्यक्ष और महाप्रबंधक थे। स्थानीय मीडिया के अनुसार, हेलीकॉप्टर माउंट ओलोलोक्वे की तलहटी में स्थित एक दुर्गम और ऊबड़-खाबड़ इलाके में गिरा। यह स्थान पर्यटकों के बीच लोकप्रिय है। हेलीकॉप्टर स्थानीय कंपनी लेडी लॉरी हेलीकॉप्टर्स का था और चार्टर उड़ान के तहत यात्रियों को ले जा रहा था। सफारी कंपनी एंडबियॉन्ड के साथ यात्रा कर रहे लोगों के लिए यह उड़ान संचालित की गई थी। ट्रॉपिक एयर केन्या ने तलाश और बचाव अभियान में मदद के लिए अपने दो हेलीकॉप्टर भेजे। केन्या रेड क्रॉस की आपातकालीन टीमें भी बहु-एजेंसी राहत अभियान में शामिल हुईं।

गंगा जल पर फिर तनातनी: गारंटी प्रावधान मांगने की तैयारी में बांग्लादेश, क्या भारत से बिगड़ेंगे रिश्ते

ढाका, एजेंसी। बांग्लादेश ने भारत के साथ गंगा जल संधि के नवीनीकरण को लेकर अपना रुख साफ कर दिया है। पड़ोसी मुल्क अब नई संधि में 'गारंटी प्रावधान' शामिल करने की मांग करेगा। साथ ही उसने संकेत दिया है कि पानी के अधिकारों की रक्षा के लिए जरूरत पड़ने पर अंतरराष्ट्रीय मंचों का रुख भी किया जा सकता है। जल संसाधन मंत्री शाहिदुद्दीन चौधरी अनी ने मंगलवार को ढाका में आयोजित एक संगोष्ठी में यह बात कही। संगोष्ठी का विषय था- 'गंगा जल संधि- पुनर्विचार के मुद्दे'। इसका आयोजन बांग्लादेश इंस्टीट्यूट ऑफ लॉ एंड इंटरनेशनल अफेयर्स ने किया था। सरकारी समाचार एजेंसी बीएसएस ने इसकी जानकारी दी।

दिसंबर में समाप्त होने वाली है गंगा जल संधि : भारत और बांग्लादेश के बीच 1996 में हुई गंगा जल संधि दिसंबर में समाप्त होने वाली है। यह संधि सूखे मौसम में गंगा के पानी के बंटवारे की व्यवस्था करती है। अनी ने कहा कि बांग्लादेश संधि पर दोबारा बातचीत के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने उम्मीद जताई कि प्रधानमंत्री तारिक रहमान अगले महीने संयुक्त राष्ट्र में बांग्लादेश का पक्ष मजबूती से रखेंगे। उन्होंने कहा कि बांग्लादेश को संधि चाहिए। उनके मुताबिक, बिना संधि के आगे बढ़ने का कोई रास्ता नहीं है और यह बांग्लादेश का अधिकार है।

क्या 1977 वाला गारंटी प्रावधान फिर लौटेगा : अनी ने भविष्य की जल-बंटवारा संधियों में सूचना के अधिकार से जुड़ा प्रावधान शामिल करने की जरूरत बताई। उन्होंने 1977 की गंगा संधि में मौजूद 'गारंटी प्रावधान' को फिर शामिल करने की मांग की। यह प्रावधान 1996 की संधि में नहीं रखा गया था। गारंटी प्रावधान का मतलब है कि निचले हिस्से वाले देश को पानी की न्यूनतम मात्रा मिलने की गारंटी हो। इसका उद्देश्य सूखे मौसम या नदी का जलस्तर अचानक घटने पर पानी की आपूर्ति को सुरक्षित रखना है।

बांग्लादेश का कहना है कि मौजूदा संधि सबसे सूखे मौसम में पर्याप्त पानी की गारंटी नहीं देती। उसकी आपत्ति यह भी है कि पानी बांटने का मौजूदा तरीका पुराने जलवैज्ञानिक हालात पर आधारित है। सूखे मौसम में नदी का प्रवाह अब ज्यादा अनिश्चित हो गया है। बांग्लादेश पर्यावरण से जुड़े प्रावधानों को भी अपर्याप्त मानता है। वह ऊपरी हिस्से में पानी की निकासी, नदी के स्वास्थ्य, बढ़ती लवणता और पारिस्थितिक प्रवाह को भी चर्चा में शामिल करना चाहता है।

क्या फरक्का बैराज फिर बनेगा विवाद का केंद्र : भारत-बांग्लादेश जल संबंधों में फरक्का बैराज लंबे समय से विवाद का विषय रहा है। पश्चिम बंगाल में भारत द्वारा बनाए गए इस बैराज का उद्देश्य गंगा के पानी के एक हिस्से को हुगली नदी तंत्र की ओर मोड़ना है। बांग्लादेश में इसे लेकर लंबे समय से चिंता रही है कि इससे सूखे मौसम में नीचे की ओर पानी का प्रवाह कम होता है। अनी ने कहा कि बांग्लादेशी लोग लंबे समय से फरक्का बैराज को 'मौत का जाल' मानते रहे हैं। उन्होंने दावा किया कि फरक्का के बाद भारत ने गंगा पर बैराज और करीब 900 तटबंध बनाए, जिससे दोनों देशों के संबंधों पर दबाव पड़ा।

भारत का रुख क्या : भारत का कहना है कि फरक्का बैराज बांध नहीं, बल्कि पानी को मोड़ने वाली संरचना है। विदेश मंत्रालय के अनुसार, इसके द्वारों की व्यवस्था के जरिए गंगा के करीब 40,000 क्यूसेक पानी को फरक्का नहर में भेजने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। बाकी पानी बांग्लादेश की ओर बहता रहता है। भारत यह भी कहता है कि समझौते के तहत जल प्रवाह का आंकड़ा संयुक्त नदी आयोग के जरिए बांग्लादेश के साथ नियमित रूप से साझा किया जाता है। बांग्लादेश और भारत के बीच 54 प्रमुख नदियां साझा हैं। गंगा दोनों देशों के लिए सबसे महत्वपूर्ण सीमा-पार नदियों में से एक है। जल बंटवारे और नदी से जुड़े मुद्दों पर दोनों देश संयुक्त नदी आयोग के जरिए बातचीत करते हैं।

क्या भारत जल्द शुरू करेगा नई संधि पर बातचीत : जुलाई में भारत की विदेश मामलों की संसदीय स्थायी समिति ने सरकार से बांग्लादेश के साथ गंगा जल संधि के नवीनीकरण पर बिना और देरी के बातचीत शुरू करने को कहा था। समिति ने सिफारिश की थी कि बातचीत में नए जलवैज्ञानिक आंकड़ों, जलवायु अनुमानों और पश्चिम बंगाल तथा बिहार की चिंताओं को ध्यान में रखा जाए। भारत सरकार ने फरवरी में संसद को बताया था कि संधि के नवीनीकरण को लेकर बांग्लादेश के साथ बातचीत अभी शुरू नहीं हुई है। सरकार ने यह भी कहा था कि पश्चिम बंगाल सरकार सहित संबंधित पक्षों से मिले सुझावों को भारत का रुख तय करते समय ध्यान में रखा गया है। अनी की यह टिप्पणी ऐसे समय आई है, जब इससे दो दिन पहले उन्होंने कहा था कि बांग्लादेश तीस्ता नदी के लंबे समय से लंबित जल-बंटवारा समझौते को लेकर भारत के साथ अपने मैत्रीपूर्ण संबंध खराब नहीं करना चाहता। उन्होंने भारत से अपने हितों के साथ बांग्लादेश के हितों को भी ध्यान में रखने की अपील की थी।

नताली हार्प बनीं ट्रंप की सबसे भरोसेमंद साथी, कैमरे से दूर रहकर कैसे बढ़ा व्हाइट हाउस में असर

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के आसपास कई ताकतवर लोग हैं, लेकिन 35 वर्षीय नताली हार्प की भूमिका अलग नजर आती है। वह कैमरे के सामने बोलने वाली अधिकारी नहीं हैं, फिर भी ट्रंप के आसपास लगातार दिखाई देती हैं। ओवल ऑफिस से लेकर मरीन वन तक वह राष्ट्रपति के साथ रहती हैं। खास तौर पर प्रेस सचिव रहीं केरोलिन लेविट की विदाई के बाद व्हाइट हाउस में हार्प की अहमियत और बढ़ने की बात सामने आई है।

नताली हार्प को ह्यूमन प्रिंटर क्यों कहा जाता है : हार्प ट्रंप के लिए लगातार जानकारी जुटाने, विश्व नेताओं से संदेशों के आदान-प्रदान और सोशल मीडिया पोस्ट तैयार करने में मदद करती हैं। वह देर रात तक राष्ट्रपति के साथ काम करती हैं और रविवार को भी छुट्टी नहीं लेने की बात सामने आई है। उनके पास एक पोर्टेबल प्रिंटर भी रहता है। इसी वजह से व्हाइट हाउस में उन्हें 'ह्यूमन प्रिंटर' कहा जाता है। वह ट्रंप तक सोशल मीडिया और बाहरी दुनिया की जानकारी तुरंत पहुंचाने में अहम भूमिका निभाती हैं।

ट्रंप के साथ खतरनाक सफर में भी क्यों रहीं : नताली की भूमिका उस समय भी चर्चा में आई जब वह एक बेहद गुप्त अभियान का हिस्सा बनीं। इस अभियान में हमले के खतरे के बीच ट्रंप और कुछ चुनिंदा लोगों को तुर्किये से सुरक्षित

निकालने की कोशिश की गई थी। इसके लिए विमान के कैटरिंग कंटेनर का इस्तेमाल किया गया था। इस घटना के बाद हार्प की भूमिका ज्यादा लोगों की नजर में आई। ट्रंप के करीबी सहयोगियों के अनुसार, राष्ट्रपति के प्रति उनकी निष्ठा बेहद मजबूत है।

ट्रंप से नताली का रिश्ता इतना खास कैसे बना : हार्प की ट्रंप से नजदीकी का एक निजी कारण भी बताया जाता है। वह कैंसर से जूझ चुकी हैं। उनके अनुसार, ट्रंप की ओर से समर्थित 'राइट टू ट्राई' कानून ने उन्हें प्रयोगात्मक इलाज तक पहुंच दिलाने में मदद की और इससे उनकी जिंदगी बचाने में मदद मिली। ट्रंप भी कई बार कह चुके हैं कि दूसरे कर्मचारी भविष्य में उनका साथ छोड़ सकते हैं, लेकिन नताली ऐसा नहीं करेंगी। यही निजी अनुभव दोनों के बीच भरोसे की एक वजह माना जाता है। हाल ही में सामने आए पत्रों में नताली ने ट्रंप के प्रति अपनी बेहद गहरी निष्ठा जाहिर की थी।

यूएनएससी में भारत की दो टूक: विकासशील देशों को मिले अधिक प्रतिनिधित्व, आतंकवाद पर राजनीति को लेकर क्या कहा

संयुक्त राष्ट्र, एजेंसी। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) के काम करने के तरीकों पर खुली चर्चा हुई। इस चर्चा में भारत की राजदूत योजना पटेल ने देश का पक्ष रखा।उन्होंने कहा कि भारत वैश्विक दक्षिण यानी विकासशील देशों को सुरक्षा परिषद में ज्यादा प्रतिनिधित्व देने की मांग करता है। उन्होंने कहा कि अस्थायी सदस्यों को सुरक्षा परिषद में सार्थक योगदान देने का मौका मिलना चाहिए। इसके लिए सुरक्षा परिषद के सभी सदस्यों को दस्तावेजों तक पहुंच के मामले में एक जैसे अधिकार और सुविधाएं मिलनी चाहिए।

राजदूत योजना पटेल ने क्या कहा : योजना पटेल ने कहा कि जो देश सीधे तौर पर किसी मुद्दे से जुड़े हैं, उन्हें सुरक्षा परिषद के फैसले लेने की व्यवस्था में भी शामिल किया जाना चाहिए। खासकर शांति स्थापना से जुड़े सभी बड़े सवालों में उनकी भूमिका होनी चाहिए। इनमें मिशन का काम क्या होगा और उसके लिए कितने संसाधन दिए जाएंगे जैसे मुद्दे शामिल हैं। उन्होंने कहा कि दस्तावेज संख्या- 507 में उचित बदलाव किया जाना चाहिए। इसमें सुरक्षा परिषद की सहायक संस्थाओं के अध्यक्षों के नाम तय करने के लिए स्पष्ट और अंतिम समय-सीमा होनी चाहिए। यह समय-सीमा ऐसी होनी चाहिए, जिस पर कोई समझौता न हो सके।

आतंकवाद पर राजनीति को लेकर क्या कहा : भारत ने यह भी कहा कि सुरक्षा परिषद को छोटे और सीमित राजनीतिक हितों को आगे बढ़ाने का मंच नहीं बनना चाहिए। योजना पटेल ने कहा कि सुरक्षा परिषद में किसी देश की मौजूदगी का इस्तेमाल आतंकवादियों को वैध ठहराने के लिए नहीं किया जाना चाहिए। केवल राजनीतिक कारणों के आधार पर आतंकियों को आतंकवादी सूची से हटाने या दूसरी संस्थाओं को आतंकवादी संगठन घोषित करने की कोशिश नहीं होनी चाहिए। इसके लिए निष्पक्ष मापदंड और समर्थन करने वाले दस्तावेज होना जरूरी है।

अमेरिका में आरएसएस पर बैन लगाने की मांग, भागवत के यूएस दौरे पर यूएससीआईआरएफ सख्त; बोला- संघ नेताओं को न मिले सम्मान

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका की धार्मिक स्वतंत्रता पर काम करने वाली सलाहकार संस्था यूएस कमीशन ऑन इंटरनेशनल रिलिजियस फ्रीडम (यूएससीआईआरएफ) के अधिकारियों ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) पर प्रतिबंध लगाने की मांग की है। साथ ही, उन्होंने अमेरिकी सरकार से अपील की है कि वह आरएसएस नेताओं को राजनयिक सम्मान न दे और न ही उनके साथ किसी तरह की हाई-लेवल मीटिंग करे। यह बयान आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत के प्रस्तावित अमेरिका दौरे से पहले आया है। वहीं, भारत पहले ही यूएससीआईआरएफ की रिपोर्टों को पक्षपातपूर्ण और वैचारिक पूर्वाग्रह पर आधारित बताते हुए खारिज कर चुका है। आरएसएस नेताओं से दूरी बनाने की अपील यूएससीआईआरएफ के चेयरमैन

आसिफ महमूद ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के सदस्य हैं। उन्होंने आरएसएस को एक %अंब्रेला ऑर्गनाइजेशन यानी ऐसा मुख्य संगठन बताया, जिसके सहयोगी संगठनों पर धार्मिक अल्पसंख्यकों पर हमले करने के आरोप लगते रहे हैं। महमूद की ये टिप्पणियां आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत के अमेरिका दौरे से कुछ हफ्ते पहले सामने आई हैं। भागवत 29 अगस्त को न्यूयॉर्क में अमेरिकन हिंदूज फॉर एंगेजमेंट एंड डायलॉग की ओर से आयोजित यूनिवर्सल वननेस सेलिब्रेशन (एकता का उत्सव) में शामिल होने वाले हैं। आरएसएस सदस्यों पर प्रतिबंध की मांग यूएससीआईआरएफ कमिश्नर जीन मिल्स ने कहा कि आरएसएस नेताओं को, भले ही वे भारत सरकार से जुड़े हों, हाई-लेवल मीटिंग या राजनयिक सम्मान नहीं दिया जाना चाहिए। इसके बजाय, अमेरिकी सरकार को उन आरएसएस सदस्यों पर प्रतिबंध लगाने पर ध्यान देना चाहिए, जो फ्रीडम ऑफ रिलिजन ऑर बिलीफ यानी धार्मिक स्वतंत्रता के उल्लंघन के लिए जिम्मेदार पाए गए हैं। यूएससीआईआरएफ ने आसिफ महमूद और जीन मिल्स की इन टिप्पणियों को अपने एक्स अकाउंट पर पोस्ट किया है। महमूद ने आरएसएस को लेकर क्या कहा महमूद ने कहा, भारत के प्रधानमंत्री मोदी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के सदस्य हैं। यह भारत का एक मुख्य संगठन है, जिसके सहयोगी समूहों ने ईसाइयों और मुसलमानों सहित धार्मिक अल्पसंख्यकों पर हमले किए हैं। अब आरएसएस नेता मोहन भागवत अमेरिका का दौरा करने वाले हैं। हिंदूज फॉर ह्यूमन राइट्स ने भी उठाए सवाल एडवोकेसी ग्रुप हिंदूज फॉर ह्यूमन राइट्स ने कहा कि मोहन भागवत के दौरे को मुसलमानों और ईसाइयों के खिलाफ आरएसएस नेटवर्क से जुड़े हिंसा के आरोपों से अलग करके नहीं देखा जा सकता।

विदेशों का नया ट्रेंड भारत की पुरानी जीवनशैली है ब्रिटेन-अमेरिका के जेन-जी अपना रहे भारतीय साइलेंट वॉक

लंदन, एजेंसी। अमेरिका और ब्रिटेन समेत पश्चिमी देशों में जेन-जी के बीच इन दिनों साइलेंट वॉकिंग तेजी से लोकप्रिय हो रही है। इसमें युवा मोबाइल फोन को दूर रखकर, ईयरफोन उतारकर और बिना संगीत या पॉडकास्ट सुने चुपचाप टहलते हैं। सोशल मीडिया पर इसे तनाव कम करने और मानसिक सुकून पाने के तरीके के रूप में पेश किया जा रहा है। हालांकि भारतीयों के लिए यह तरीका उतना नया नहीं है, क्योंकि यहां मौन और एकांत में टहलने की परंपरा लंबे समय से चली आ रही है।

क्या है साइलेंट वॉकिंग और युवा इसे क्यों अपना रहे हैं : साइलेंट वॉकिंग का मतलब बिना किसी डिजिटल गतिविधि के पैदल चलना है। इस दौरान मोबाइल, संगीत, पॉडकास्ट, ऑडियोबुक और सोशल मीडिया से दूरी बनाई जाती है। व्यक्ति केवल अपने कदमों, विचारों और

आसपास के वातावरण पर ध्यान देता है। लगातार फोन और इंटरनेट से जुड़े रहने वाली युवा पीढ़ी के लिए यह तरीका कुछ समय के लिए डिजिटल दुनिया से दूरी बनाने का अवसर देता है। इसे तनाव कम करने और मन को शांत करने के एक आसान तरीके के रूप में देखा जा रहा है। क्या भारत में यह परंपरा पहले से मौजूद है भारत में मौन और एकांत को मानसिक शांति से जोड़ने की परंपरा सदियों पुरानी है। मंदिरों की परिक्रमा, मौन व्रत और विपश्यना जैसे अभ्यासों में बाहरी शोर से दूरी बनाकर आत्मचिंतन पर जोर दिया जाता है। मंदिर परिसरों और पार्कों में चुपचाप टहलना भी भारतीय जीवनशैली का हिस्सा रहा है। इसलिए पश्चिमी देशों में साइलेंट वॉकिंग का बढ़ता चलन भारतीय नजरिए से किसी बिल्कुल नई चीज के बजाय पुरानी परंपरा के आधुनिक रूप जैसा दिखाई देता है।

क्या भारतीय युवा भी इसे अपना रहे हैं : भारत में भी युवा बिना ईयरफोन और मोबाइल में व्यस्त हुए सार्वजनिक जगहों पर टहलते नजर आ रहे हैं। दिल्ली का लोधी गार्डन, बंगलूरू का कब्बन पार्क और मुंबई का मरीन ड्राइव ऐसे स्थान हैं, जहां लोग चहलकदमी करते हैं। हालांकि भारत में इसे हमेशा साइलेंट वॉकिंग के नाम से नहीं जाना जाता। पश्चिम में इसके लिए एक नया नाम और सोशल मीडिया ट्रेंड बन गया है, जबकि भारत में इसके पीछे की आदत और विचार लंबे समय से मौजूद हैं।

2023 में सोशल मीडिया पर कैसे लोकप्रिय हुआ यह नाम : साइलेंट वॉकिंग की अवधारणा पुरानी है, लेकिन इसका नाम 2023 में सोशल मीडिया पर तेजी से लोकप्रिय हुआ। टिकटॉक क्रिएटर मैडी माओ ने बिना फोन, संगीत और पॉडकास्ट के 30 मिनट टहलने का अपना अनुभव साझा किया था। इसके बाद यह तरीका सोशल मीडिया पर चर्चा में आ गया। धीरे-धीरे फ्रांस, जर्मनी, इटली, स्पेन, नीदरलैंड और बेल्जियम समेत कई पश्चिमी देशों के युवाओं ने इसे अपनाना शुरू कर दिया। साइलेंट वॉकिंग के बढ़ते चलन में डिजिटल दुनिया से थोड़ी देर दूरी बनाने की कोशिश साफ दिखाई देती है।

ईरान पर होगी सबसे बड़ी आर्थिक कार्रवाई: ट्रंप ने दी धमकी, मदद करने वाले देशों को चेताया; क्या बढ़ेगा तनाव

वाशिंगटन डीसी, एजेंसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ईरान के खिलाफ अब तक की सबसे सख्त आर्थिक कार्रवाई की धमकी दी। उन्होंने कहा कि ईरान को अमेरिका के साथ समझौता करने का सबसे बड़ा मौका दिया गया था। लेकिन उसने इसे गंवा दिया।

ट्रंप ने कहा, इस्लामी गणराज्य ईरान को किसी समझौते के लिए मुझसे ज्यादा बड़ा मौका किसी ने नहीं दिया। दुख की बात है कि उन्होंने इस मौके का फायदा नहीं उठाया। इसलिए आज मैं किसी भी देश के खिलाफ अब तक की सबसे कड़ी आर्थिक कार्रवाई की घोषणा कर रहा हूं। उन्होंने दावा किया कि ईरान की नौसेना खत्म हो चुकी है। उसकी वायु सेना नष्ट हो गई है। उसकी सैन्य फैक्टरियां मलबे में बदल गई हैं। ईरान की मुद्रा बेकार हो गई है और देश बेहद कमजोर स्थिति में है।

ईरान की मदद करने वाले देशों पर भी कार्रवाई : ट्रंप ने कहा कि जो भी देश ईरान को किसी भी तरह की आर्थिक मदद देगा, उसे भी बड़े आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ेगा। इसमें वित्तीय संस्थान, कारोबार, हवाई अड्डे और सरकारी संस्थाएं शामिल हैं। उन्होंने तेल की तस्करी, स्वैप लाइन, नकद लेनदेन, एक्सचेंज हाउस, जहाजों के पंजीकरण और ईरान की मदद करने वाली छिपी हुई (शेल) कंपनियों को तुरंत रोकने की बात कही।

सहयोगी देशों से अमेरिका के साथ आने की अपील : ट्रंप ने इसे ईरान के खिलाफ बड़े आर्थिक हमले का दिन बताया। उन्होंने अमेरिका के सहयोगी देशों से ईरान को अलग-थलग करने और उसके खतरे को खत्म करने में साथ देने की अपील की। उन्होंने कहा कि ईरान इस समय बेहद कमजोर स्थिति में है।

उन्होंने दावा किया कि ये ऐतिहासिक कदम ईरान को और दुनियाभर में आतंक फैलाने की उसकी क्षमता को बुरी तरह कमजोर कर देंगे। अमेरिकी राष्ट्रपति ने कहा, ईरान के पास कभी परमाणु हथियार नहीं होगा।

अमेरिका ने ईरान पर आर्थिक दबाव बढ़ाया : अमेरिकी वित्त मंत्री स्कॉट बेसेंट के पिछले हफ्ते इसी तरह बयान दिया था। बेसेंट ने कहा था कि अमेरिका ईरान को आर्थिक रूप से अलग-थलग करने की कोशिशें बढ़ाएगा। इस रणनीति में अमेरिकी नौसैनिक नाकाबंदी भी शामिल है। अमेरिकी वित्त मंत्रालय %ऑपरेशन इकोनॉमिक फ्यूरी% नाम से प्रतिबंध अभियान भी चला रहा है। इसका मकसद लक्षित कार्रवाई के जरिये ईरान के पैसे जुटाने के स्रोतों को बंद करना है। युद्ध की शुरुआत 28 फरवरी को ईरान पर अमेरिका और इस्राइल के हमलों के साथ हुई। इसके जवाब में ईरान ने खाड़ी क्षेत्र में अमेरिकी ठिकानों पर मिसाइल और ड्रोन से हमले किए। रिपोर्ट के मुताबिक, रूस ने ईरान को सैन्य उपकरण और ड्रोन से जुड़ी तकनीक दी है। वहीं, चीन लगातार ईरान से तेल खरीद रहा है। चीन ने ईरान के साथ कारोबारी रिश्ते बनाए रखे हैं और उसे कूटनीतिक समर्थन भी दिया है।

कौन हैं अमेरिका की एफडीए प्रमुख बनने जा रहीं हेइडी ओवरटन, ट्रंप ने किया नामित, विवादों से भी रहा है नाता

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने व्हाइट हाउस की वरिष्ठ अधिकारी डॉ. हेइडी ओवरटन को खाद्य एवं औषधि प्रशासन यानी एफडीए का अगला आयुक्त बनाने के लिए नामित किया है। अगर अमेरिकी सीनेट उनकी नियुक्ति को मंजूरी देती है, तो वह इस बेहद महत्वपूर्ण संस्था की जिम्मेदारी संभालेंगी। एफडीएअमेरिका में दवाओं, वैक्सीन, चिकित्सा उपकरणों और खाद्य पदार्थों की सुरक्षा और नियमन से जुड़े बड़े फैसले करता है। ओवरटन फिलहाल व्हाइट हाउस के घरेलू नीति परिषद में उपनिदेशक के पद पर हैं और ट्रंप प्रशासन की स्वास्थ्य नीतियों को आगे बढ़ाने में सक्रिय भूमिका निभाती रही हैं।

ओवरटन की पढ़ाई और करियर कितना मजबूत : हेइडी ओवरटन मेडिकल डॉक्टर हैं। उन्होंने यूनिवर्सिटी ऑफ न्यू मैक्सिको से मेडिकल की पढ़ाई की। इसके बाद जॉन्स हॉपकिन्स में जनरल सर्जरी का प्रशिक्षण लिया और क्लिनिकल जांच से जुड़ी उच्च शिक्षा भी हासिल की। ट्रंप प्रशासन में आने से पहले वह कंजर्वेटिव थिंक टैंक अमेरिका फर्स्ट पॉलिसी इंस्टीट्यूट में मुख्य नीति अधिकारी के रूप में काम कर चुकी हैं। यानी उनका अनुभव केवल चिकित्सा तक सीमित नहीं है, बल्कि स्वास्थ्य नीति और राजनीतिक प्रशासन से भी जुड़ा रहा है।

ट्रंप के भरोसेमंद लोगों में कैसे शामिल हुईं : दूसरे कार्यकाल में ओवरटन ट्रंप की कई स्वास्थ्य योजनाओं में उनके साथ दिखाई दी हैं। दवा की कीमत कम करने, नई दवाओं को तेजी से मंजूरी देने और स्वास्थ्य नीति में बदलाव से जुड़े कई कार्यक्रमों में उन्होंने भूमिका निभाई है। ट्रंप ने उनके नाम की घोषणा करते हुए उन्हें बेहद सक्षम और भरोसेमंद अधिकारी बताया तथा तेज इलाज, चिकित्सा नवाचार और दवाओं की कम कीमत जैसे लक्ष्यों को आगे बढ़ाने की उम्मीद जताई। स्वास्थ्य मंत्री रॉबर्ट एफ. कैनेडी जूनियर ने भी ओवरटन के फैसले लेने की क्षमता और प्रशासनिक अनुशासन की तारीफ की है।

वैक्सीन नीति को लेकर क्यों उठे सवाल : ओवरटन की नियुक्ति का

सबसे विवादित पक्ष उनकी वैक्सीन नीति से जुड़ी भूमिका है। हाल में वह उस कार्यक्रम में ट्रंप के साथ खड़ी थीं, जिसमें बच्चों के टीकाकरण से जुड़ी नीति में बड़े बदलावों की घोषणा की गई थी। इसमें खसरा, कण्ठमाला और रूबेला यानी एमएमआर वैक्सीन को अलग-अलग टीकों में बांटने की योजना भी शामिल थी। चिकित्सा जगत के कई लोगों ने इस नीति पर सवाल उठाए हैं। इसी वजह से ओवरटन की एफडीएमें संभावित भूमिका को लेकर वैज्ञानिक और स्वास्थ्य क्षेत्र में बहस तेज हो गई है।

गर्भपात की दवाओं पर क्या है ओवरटन का रुख : ओवरटन गर्भपात की दवाओं को लेकर भी सख्त रुख रखती हैं। वह ऐसी दवाओं की उपलब्धता और ऑनलाइन इस्तेमाल से जुड़ी मौजूदा व्यवस्था की आलोचना कर चुकी हैं। अगर सीनेट से उनकी नियुक्ति मंजूर होती है, तो स्नष्ठ के सामने गर्भपात की दवाओं से जुड़े नियमों की समीक्षा भी एक बड़ा मुद्दा हो सकता है। अमेरिका में गर्भपात को लेकर पहले से ही राजनीतिक और कानूनी विवाद चल रहा है। इसलिए इस मुद्दे पर ओवरटन के फैसलों पर खास नजर रहेगी।

एफडीएको संभालते ही किन बड़ी चुनौतियों का सामना होगा : ओवरटन ऐसे समय एफडीए की कमान संभाल सकती हैं, जब संस्था पहले ही नेतृत्व और कर्मचारियों से जुड़ी बड़ी चुनौतियों से गुजर रही है। पूर्व आयुक्त डॉ. मार्टी मकारी ने मई में पद छोड़ दिया था। उनके कार्यकाल में ई-सिगरेट, गर्भपात की दवाओं और नई दवाओं की मंजूरी जैसे मुद्दों पर विवाद रहे। एफडीए में बड़ी संख्या में कर्मचारियों के जाने से भी संस्था पर दबाव बढ़ा है। ऐसे में नई प्रमुख से प्रशासनिक स्थिरता और जनता का भरोसा बहाल करने की उम्मीद होगी।

क्या दवाओं की मंजूरी का तरीका भी बदल सकता है : एफडीए की एक बड़ी जिम्मेदारी नई दवाओं और चिकित्सा उत्पादों की जांच तथा मंजूरी देना है। ट्रंप प्रशासन तेज मंजूरी और चिकित्सा नवाचार को बढ़ावा देने की बात करता रहा है। दूसरी ओर, एफडीए से जुड़े वैज्ञानिक और सार्वजनिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ सुरक्षा मानकों को लेकर सतर्क रहने की जरूरत पर जोर देते हैं। ओवरटन को इन दोनों के बीच संतुलन बनाना होगा। खासकर दुर्लभ बीमारियों की दवाओं, जैव-तकनीकी उत्पादों और नई चिकित्सा तकनीकों से जुड़े फैसले उनके सामने महत्वपूर्ण चुनौती होंगे। एफडीए केवल दवाओं और वैक्सीन तक सीमित नहीं है। खाद्य सुरक्षा भी उसकी जिम्मेदारी का महत्वपूर्ण हिस्सा है। ट्रंप प्रशासन में स्वास्थ्य मंत्री रॉबर्ट एफ. कैनेडी जूनियर ने अल्ट्राप्रोसेस्ड खाद्य पदार्थों को लेकर लगातार सवाल उठाए हैं।

गांधीनगर म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन की फ़ूड सेफ़्टी ब्रांच होटलों और रेस्टोरेंट की जांच कर रही है

पट्टी वड़ा पाव के रजिस्ट्रेशन को 7 दिनों के लिए सस्पेंड कर दिया गया है क्योंकि वहां चूहों के कुतरे हुए पाव के पैकेट मिले

प्रतिनिधि द्वारा - गांधीनगर

गांधीनगर म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन की फ़ूड सेफ़्टी ब्रांच ने 21/08/2026 को 7 छोटे-बड़े होटलों और रेस्टोरेंट का निरीक्षण किया। यह निरीक्षण फ़ूड सेफ़्टी एंड स्टैंडर्ड्स एक्ट 2006 के तहत किया गया, जिसमें खाने-पीने की चीज़ों की क्वालिटी की जांच की गई। एक्ट के तहत साफ़-सफ़ाई और हाइजीन से जुड़े नियमों (शेड्यूल-4) के आधार पर किए गए निरीक्षण में, साफ़-सफ़ाई और हाइजीन की स्थितियों में कमियां पाए जाने पर 2 फ़र्मों - ग्वालिया फ़ूड (रक्षाशक्ति सर्कल) और राजवी फ़ूड (कुडसन) - को सुधार के लिए नोटिस दिए गए। जांच के लिए इन अलग-अलग फ़र्मों से कुल 10 सैंपल लिए गए। सैंपल की जांच रिपोर्ट आने के बाद आगे की कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

इसके अलावा, शहर के कुल 7 होटल-रेस्टोरेंट में साफ़-सफ़ाई और हाइजीन की स्थितियों की जांच के दौरान, पट्टी वड़ा पाव नाम की फ़र्म में साफ़-सफ़ाई और हाइजीन की स्थिति ठीक नहीं पाई गई; किचन में गंदगी मिली और पाव के पैकेट चूहों द्वारा कुतरे हुए पाए गए। इसलिए, इसके फ़ूड रजिस्ट्रेशन को 7 दिनों के लिए सस्पेंड कर दिया गया है और उस फ़र्म को बंद कर दिया गया है। अगर कोई सुधार नहीं दिखता है, तो आगे सख्त कानूनी कार्रवाई की जाएगी। साथ ही, रक्षा शक्ति सर्कल के पास स्थित ग्वालिया फ़ूड फ़र्म में भी हाइजीन और साफ़-सफ़ाई की स्थितियों में कमियां पाई गईं। वहां जिनी सेव, चवणु आदि जैसे एक्सपायर्ड फ़ूड आइटम मिले, साथ ही 31 किलो अस्वच्छ आटा (जिसकी कीमत लगभग 10,000 रुपये थी) मिला, जिसे मौके पर ही नष्ट कर दिया गया और उस फ़र्म को सुधार के लिए नोटिस जारी किया गया। एक अन्य फ़र्म, राजवी फ़ूड कॉर्नर को भी साफ़-सफ़ाई और हाइजीन की उचित स्थिति बनाए न रखने के लिए सुधार का नोटिस दिया गया है। जांच के दौरान, खाने की अलग-अलग चीज़ों के कुल 10 सैंपल लिए गए हैं। इनमें सरगासन के ला क्रस्ट होटल से पनीर शशलिक सिज़लर, मिल्केन मलाई पनीर और कच्चा माल जैसे तुअर दाल, मैदा, देगी मिर्च पाउडर और काला नमक पाउडर शामिल हैं। साथ ही, कुडासन के राजवी फ़ूड कॉर्नर से अमूल मलाई पनीर और वेज मक्खनवाला रेडी सब्ज़ी, और रक्षाशक्ति सर्कल के ग्वालिया फ़ूड्स से मिक्स वेज रेडी फ़ूड और दही के सैंपल भी लिए गए हैं। इनकी एनालिसिस रिपोर्ट मिलने के बाद आगे की कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

इसके अलावा, सभी जगहों पर अच्छी क्वालिटी और सेहतमंद खाना परोसा जाए, यह पक्का करने के निर्देश दिए गए हैं। साथ ही, फ़ूड सेफ्टी एंड स्टैंडर्ड्स एक्ट 2006 और इसके तहत बने सभी नियमों का सख्ती से पालन करने के निर्देश भी दिए गए हैं।

साथ ही, गांधीनगर शहर के सभी होटलों, रेस्टोरेंट और खाने की गाड़ियों (लॉरी) से खास तौर पर अपील की गई है कि किचन में काम करने वाले और खाना परोसने वाले लोग कैप, एप्रन और ग्लव्स पहनें। रेडी-मेड खाने की चीज़ें बनाने में किसी भी तरह के रंग का इस्तेमाल न करें और अख़बार का इस्तेमाल भी न करें। खाना साफ़-सुथरे माहौल में तैयार करें और परोसें। म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन यह जांच जारी रखेगा और पक्का करेगा कि फ़ूड सेफ्टी एंड स्टैंडर्ड्स एक्ट 2006 के नियमों का पालन हो। नियमों के उल्लंघन पर लाइसेंस/रजिस्ट्रेशन सर्टिफिकेट रद्द करने या हमेशा के लिए बंद करने जैसी सख्त कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

गांधीनगर म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन लगातार कोशिश कर रहा है और काम कर रहा है ताकि शहर के सभी नागरिकों को साफ़, सेहतमंद और सुरक्षित खाना मिल सके।

दो मरीज़ों का इलाज चल रहा है, 18 संदिग्ध मामले

अहमदाबाद में स्वाइन फ्लू के मामले बढ़े

एजेंसी - अहमदाबाद,

मानसून में बढ़ती नमी के कारण दिल्ली में कहर बरपाने ??के बाद, अब स्वाइन फ्लू अहमदाबाद में भी आ गया है। स्वाइन फ्लू के दो पॉजिटिव मामले सामने आने के बाद स्वास्थ्य विभाग हरकत में आ गया है। फिलहाल, दोनों मरीज़ों को इलाज के लिए आइसोलेशन वार्ड में रखा गया है। साथ ही, संदिग्ध मामलों की संख्या भी चिंताजनक है, इसलिए स्वास्थ्य विभाग एक्शन मोड में आ गया है।

अहमदाबाद में सोला सिविल अस्पताल में स्वाइन फ्लू के दो पॉजिटिव मामले और 18 संदिग्ध मामले सामने आए हैं, जिससे स्वास्थ्य विभाग अलर्ट हो गया है। इसके चलते दोनों पॉजिटिव मरीज़ों को इलाज के लिए एक खास आइसोलेशन वार्ड में रखा गया है। मौसम में लगातार बदलाव के कारण सर्दी, खांसी और बुखार जैसे वायरल संक्रमण के मामलों में बढ़ोतरी हुई है।

चूंकि स्वाइन फ्लू एक संक्रामक बीमारी है, इसलिए संक्रमण का खतरा खासकर बुजुर्गों और बीपी, डायबिटीज, कैंसर जैसी बीमारियों वाले मरीज़ों के लिए सबसे ज़्यादा होता है। यह वायरस संक्रमित व्यक्ति के छींकने या खांसने पर निकलने वाली बारीक बूंदों या संक्रमित सतह के संपर्क में आने से एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैल सकता है। डॉक्टरों ने लापरवाही न बरतने की अपील की है, खासकर अगर किसी ऐसे व्यक्ति में बुखार, सर्दी या खांसी जैसे लक्षण दिखें जो गांव या देश के बाहर किसी राज्य की यात्रा से लौटा हो।

साथ ही, अगर दो दिनों तक सेहत में सुधार न हो, तो तुरंत रिपोर्ट करनी चाहिए और सही इलाज शुरू करना चाहिए। डॉक्टरों ने बिना काम के भीड़-भाड़ वाली जगहों पर न जाने की भी अपील की है, और अगर जाएं तो मास्क और दस्ताने पहनें और साफ-सफाई का ध्यान रखें।

स्वाइन फ्लू के लक्षण

अचानक बुखार और ठंड लगना

गले में खराश या सूजन

सिर और मांसपेशियों में तेज़ दर्द

थकान और कमजोरी

सांस लेने में कठिनाई

चक्कर आना

ओलंपिक-कॉमनवेल्थ गेम्स की तैयारियों की समीक्षा होगी

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह 27 अगस्त को फिर गुजरात का दौरा करेंगे

एजेंसी - अहमदाबाद,

केंद्रीय गृह और सहकारिता मंत्री अमित शाह 27 अगस्त को गुजरात का दौरा करेंगे। गुजरात दौरे के दौरान, अमित शाह अमरेली में आयोजित एक सार्वजनिक कार्यक्रम में शामिल होंगे। इसके बाद, अहमदाबाद और गांधीनगर में महत्वपूर्ण समीक्षा बैठकें होंगी। अमित शाह की अध्यक्षता में होने वाली इन बैठकों में ओलंपिक और कॉमनवेल्थ गेम्स की तैयारियों पर चर्चा और समीक्षा की जाएगी। खेल क्षेत्र में योजना, बुनियादी ढांचे की सुविधाओं और आगामी तैयारियों के संबंध में संबंधित अधिकारियों के साथ विस्तृत समीक्षा की संभावना है। गुजरात दौरे के दौरान, अमित शाह अमरेली में आयोजित एक सार्वजनिक कार्यक्रम में शामिल होंगे। इसके बाद, वह अहमदाबाद और गांधीनगर में कुछ महत्वपूर्ण समीक्षा बैठकें करेंगे। अमित शाह की अध्यक्षता में होने वाली इन विशेष बैठकों में आगामी ओलंपिक और कॉमनवेल्थ गेम्स की तैयारियों पर गहराई से चर्चा और समीक्षा की जाएगी। इस बैठक में पूरी संभावना है कि खेल क्षेत्र में दीर्घकालिक योजना, आवश्यक बुनियादी ढांचे के विकास और अन्य आगामी तैयारियों के संबंध में संबंधित उच्च अधिकारियों के साथ विस्तृत समीक्षा की जाएगी। केंद्रीय मंत्री अपने संसदीय क्षेत्र अहमदाबाद में लोगों से सीधे बातचीत भी करेंगे। वह 27 अगस्त को अंबली-बोपल में एक %लोक दरबार% आयोजित करने जा रहे हैं।

इस लोक दरबार में, वह स्थानीय लोगों की बातें और उनकी रोज़मर्रा की समस्याओं को सुनेंगे। हाल ही में हुई भारी बारिश के बाद बोपल और घुमा इलाकों में जलभराव की गंभीर समस्या पर इस लोक दरबार में विशेष चर्चा होगी। इसके अलावा, इलाके की अन्य स्थानीय समस्याओं का पता लगाने और उन्हें स्थायी रूप से हल करने के लिए गहन प्रयास किए जाएंगे। अमित शाह स्थानीय प्रशासन को आवश्यक मार्गदर्शन देंगे ताकि बोपल-घुमा क्षेत्र पूरी तरह से समस्या-मुक्त हो सके और वहां हर तरह का सुविधाजनक विकास हो सके।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री ने घोषणा की

कोदिनार को गुजरात का श्रीहरिकोटा बनाने की तैयारी शुरू

एजेंसी - कोदिनार,

गुजरात के सौराष्ट्र क्षेत्र में अंतरिक्ष क्षेत्र को नई दिशा देने की तैयारी शुरू हो गई है। राज्य सरकार ने कोदिनार के पास एक नया स्पेस लॉन्च स्टेशन या स्पेसपोर्ट बनाने की घोषणा की है।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री अर्जुन मोढवाडिया ने 21 अगस्त को अहमदाबाद के साइंस सिटी में तीन दिवसीय स्पेस फेस्टिवल के उद्घाटन के दौरान यह घोषणा की।

कोदिनार के पास स्पेसपोर्ट बनाने का काम अभी शुरुआती चरण में है। राज्य के विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग के अधिकारियों के अनुसार, भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इस्त्रो) के सहयोग से साइट का तकनीकी मूल्यांकन किया जा रहा है। साइट तय होने के बाद, प्रोजेक्ट को आगे बढ़ाने का काम शुरू किया जाएगा।

कोदिनार और गिर के बीच का तटीय इलाका पहले भी अंतरिक्ष से जुड़ी गतिविधियों के लिए संभावित जगह के तौर पर चर्चा में रहा है।

यहां की भौगोलिक स्थितियों और समुद्री इलाके के कारण रॉकेट लॉन्च की संभावना का आकलन किया जा रहा है। हालांकि, प्रोजेक्ट की अंतिम जगह और तकनीकी विवरण अभी तय होने बाकी हैं।

अभी, भारत का मुख्य स्पेसपोर्ट आंध्र प्रदेश के श्रीहरिकोटा में है, जबकि तमिलनाडु के कुलसेकरपट्टिनम में दूसरे स्पेसपोर्ट पर काम चल रहा है। अगर गुजरात में कोदिनार के पास प्रस्तावित लॉन्च सेंटर शुरू हो जाता है, तो राज्य देश के बढ़ते प्राइवेट और कमर्शियल स्पेस सेक्टर से और मजबूती से जुड़ सकता है। राज्य में अंतरिक्ष गतिविधियों, जिसमें सैटेलाइट बनाना भी शामिल है, को बढ़ावा देने के लिए खास पहल की जा रही है। अहमदाबाद में आंध्र-जिंचहरी का मुख्यालय भी है।

इसके अलावा, अहमदाबाद के पास खोराज में स्पेस टेक्नोलॉजी के लिए एक खास ज़ोन विकसित करने पर भी काम हो रहा है।

गुजरात में प्राइवेट सेक्टर की अंतरिक्ष गतिविधियां भी बढ़ रही हैं। इस साल की शुरुआत में, धोलेरा के एक स्टार्टअप ने सफलतापूर्वक अपना पहला साउंडिंग रॉकेट लॉन्च किया। अनुमान है कि राज्य में स्पेस टेक्नोलॉजी सेक्टर में 20 से ज़्यादा स्टार्टअप और संस्थान काम कर रहे हैं।

भारत 23 अगस्त को राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस मनाता है। यह दिन 2023 में चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुवीय क्षेत्र में चंद्रयान-3 के विक्रम लैंडर की सफल लैंडिंग की याद में मनाया जाता है। राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस की पूर्व संध्या पर गुजरात में एक स्पेसपोर्ट की घोषणा से अंतरिक्ष क्षेत्र में राज्य की बढ़ती महत्वाकांक्षाओं को और बढ़ावा मिल सकता है।

कांतिभाई कई युवाओं के लिए प्रेरणा बने

वापी के पाटीदार दादा ने यूरोप की सबसे ऊंची चोटी फतह की

एजेंसी - वापी,

वापी के साहसी पर्वतारोही कांतिभाई पटेल ने दुनिया की सबसे ऊंची चोटियों में से एक, माउंट एल्ब्रस को सफलतापूर्वक फतह करके वापी सहित पूरे गुजरात राज्य का मान बढ़ाया है। माउंट एल्ब्रस पर तिरंगा फहराकर उन्होंने अपनी साहसिक उपलब्धियों में एक और उपलब्धि जोड़ी है। वापी के साहसी पर्वतारोही कांतिभाई पटेल ने यूरोप महाद्वीप की सबसे ऊंची चोटी माउंट एल्ब्रस पर सफलतापूर्वक चढ़ाई की है। 13 अगस्त 2026 को, उन्होंने समुद्र तल से 5,642 मीटर या 18,510 फीट की ऊंचाई पर स्थित माउंट एल्ब्रस की चोटी पर पहुंचकर तिरंगा फहराया। माउंट एल्ब्रस रूस और यूरोप दोनों की सबसे ऊंची चोटी है और दुनिया की सेवन समिट्स (सात चोटियों) में से एक है। इससे पहले, कांतिभाई पटेल ने 15 अगस्त 2024 को अफ्रीका की सबसे ऊंची चोटी माउंट किलिमंजारो पर भी सफलतापूर्वक चढ़ाई की थी।

कांतिभाई के लिए माउंट एल्ब्रस की चढ़ाई चुनौतीपूर्ण थी। चढ़ाई के दौरान उन्हें लगातार बर्फबारी और तेज हवाओं जैसी मुश्किल स्थितियों का सामना करना पड़ा। चढ़ाई के दौरान तापमान गिरकर लगभग माइनस 10 डिग्री तक पहुंच गया था, जबकि हवा की वजह से ठंड का अहसास माइनस 35 डिग्री जैसा हो रहा था।

इन मुश्किल हालात के बावजूद, कांतिभाई ने मजबूत इच्छाशक्ति और साहस के साथ माउंट एल्ब्रस को फतह किया।

वापी के चाला इलाके में अकेले रहने वाले कांतिभाई पटेल... 63 वर्षीय कांतिभाई, जो वापी की एक फार्मा कंपनी में मैनेजर के पद से रिटायर हुए थे, 2014 में अपनी पत्नी के निधन के बाद अकेला जीवन जी रहे थे। हालांकि, रिटायरमेंट के बाद भी वे सक्रिय रहे और अपने शौक से युवाओं को भी पीछे छोड़ दिया। ट्रेकिंग और साइकिलिंग के शौकीन कांतिभाई ने इस उम्र में भी एक पर्वतारोही के तौर पर कई उपलब्धियां हासिल की हैं।

67 वर्षीय कांतिभाई को ट्रेकिंग का बहुत शौक है। उन्होंने साइकिलिंग में भी कई रिकॉर्ड बनाए हैं। पिछले 3 वर्षों में उन्होंने 55 हजार किलोमीटर से अधिक साइकिल चलाई है। इसके अलावा, उन्होंने अपनी साइकिल से भारत में कई पहाड़ियों की चढ़ाई की है, जिनमें हिमालय भी शामिल है। साइकिलिंग के शौकीन कांतिभाई पटेल रोज़ाना 30 किलोमीटर से ज़्यादा साइकिल चलाते हैं।

अब तक, उन्होंने भारत के लगभग सभी शहरों में साइकिल चलाई है।

साथ ही, तीन सालों में उन्होंने लेह, माउंट आबू, कैलाश मानसरोवर और मनाली जैसी ऊँची जगहों तक भी साइकिल चलाई है। वापी के रहने वाले 67 साल के कांतिभाई ने इस उम्र में पंच कैलाश की यात्रा पूरी करके एक अनोखा रिकॉर्ड बनाया है। आम तौर पर, मंदिरों में समय बिताने वाले बुजुर्गों की सेहत बुढ़ापे में कमज़ोर हो जाती है, लेकिन रोज़ाना 30 किलोमीटर साइकिल चलाने वाले कांतिभाई आज भी सेहतमंद जीवन जी रहे हैं। कांतिभाई कई युवाओं के लिए प्रेरणा बन गए हैं।

राजकोट घटना के बाद सीनियर डॉक्टर का पंचमहल तबादला

एजेंसी - राजकोट,

राज्य सरकार ने राजकोट सिविल अस्पताल में एक महिला डॉक्टर के साथ दुर्व्यवहार की घटना को बहुत गंभीरता से लिया है। मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में, सरकार महिलाओं की सुरक्षा, गरिमा और अधिकारों की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध है। इस संबंध में, स्वास्थ्य मंत्री प्रफुल्ल पानशेरिया ने स्वास्थ्य विभाग को तत्काल और कानूनी कार्रवाई करने के स्पष्ट आदेश दिए हैं। जैसे ही पूरी घटना सामने आई, स्वास्थ्य मंत्री प्रफुल्ल पानशेरिया ने पीड़ित महिला डॉक्टर से फोन पर बातचीत की। उन्होंने महिला डॉक्टर का हौसला बढ़ाया और उन्हें न्याय व पूरी सुरक्षा का भरोसा दिलाया। मंत्री ने स्पष्ट किया कि सरकारी अस्पतालों में महिला कर्मचारियों और डॉक्टरों की सुरक्षा से कोई समझौता नहीं किया जाएगा।

स्वास्थ्य मंत्री प्रफुल्ल पानशेरिया के आदेश पर, राजकोट के आर.जेड. अस्पताल के डॉक्टर अश्विन रमानी का तबादला पंचमहल जिले के वावकंडली स्थित प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में कर दिया गया है।

स्वास्थ्य मंत्री प्रफुल्ल पानशेरिया ने स्पष्ट रूप से कहा कि राज्य की स्वास्थ्य सेवाओं में काम करने वाली हर महिला कर्मचारी और डॉक्टर की सुरक्षा सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। राज्य सरकार कार्यस्थल पर किसी भी प्रकार के दुर्व्यवहार या अनुचित व्यवहार को बर्दाश्त नहीं करेगी।

मंत्री ने आगे कहा कि महिला डॉक्टर समाज को स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने में बहुत महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। राज्य सरकार उनके लिए सम्मानजनक और सुरक्षित कार्यस्थल बनाए रखने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है। नियमों के अनुसार इस घटना में शामिल सीनियर डॉक्टर के खिलाफ आवश्यक कानूनी कार्रवाई की गई है। स्वास्थ्य मंत्री प्रफुल्ल पानशेरिया के निर्देश पर, स्वास्थ्य विभाग ने राज्य के सभी सरकारी स्वास्थ्य संस्थानों में सुरक्षित, सम्मानजनक और सकारात्मक कार्य वातावरण सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक दिशानिर्देश जारी किए हैं।

अहमदाबाद के सरखेज इलाके से 291 लीटर देसी शराब ज़ब्त

एजेंसी - अहमदाबाद,

पुलिस ने अहमदाबाद में सरखेज-धोलका रोड पर नहर के किनारे गैर-कानूनी बिक्री के लिए रखी गई 291 लीटर देसी शराब ज़ब्त की है और एक युवक को गिरफ्तार किया है। पुलिस का कहना है कि ज़ब्त की गई शराब की कीमत 58,200 रुपये है। सरखेज पुलिस स्टेशन की टीम ने शुक्रवार (21 अगस्त) शाम को यह कार्रवाई की। पुलिस ने इस जानकारी के आधार पर छापा मारा कि सरखेज-धोलका रोड पर नरीमनपुरा नहर से लगभग 300 मीटर दूर नहर के किनारे एक सार्वजनिक जगह पर काफी मात्रा में देसी शराब रखी हुई थी।

इस कार्रवाई में पुलिस ने अजय चुनारा नाम के 22 वर्षीय युवक को गिरफ्तार किया है। अजय सरखेज के खोडियारनगर में रहता है और दिहाड़ी मजदूर के तौर पर काम करता है। पुलिस का कहना है कि वह मूल रूप से अहमदाबाद जिले के साणंद तालुका के कोडारिया गांव का रहने वाला है। पुलिस ने अजय के पास से कुल 291 लीटर देसी शराब ज़ब्त की। इसके अलावा, शराब की 180 मिलीलीटर की एक सैंपल बोतल भी ज़ब्त की गई है।

पुलिस ने आरोपी अजय चुनारा के खिलाफ गुजरात निषेध अधिनियम की संबंधित धाराओं के तहत मामला दर्ज किया है।

शुरुआती जांच में शक है कि शराब की यह खेप गैर-कानूनी बिक्री के लिए रखी गई थी।

Printed / Published /Owned by ILEVAN H. THAKAR on behalf of ILEVAN H. THAKAR and Printed at JAY GRAPHICS AND PRINTERS, C/15, Vikram Chambers, Income Tax, Ashram Raod, Ahmedabad - 380 009.
Published at 1-503, Pramukh Aura, Nr. Pramukh Nagar Bunglows, Pramukh Nagar Road, Kh-0 Road, Sargasan Char Rasta, GANDHINAGAR.(GUI) Editor: ILEVAN H. THAKAR